राष्ट्रीय हिन्दी/साप्ताहिक

हिन्दुस्तान एकता

वर्ष: 07 | अंक: 09 | पृष्ठ: 04 | मूल्य: ₹1.00

info@hindustanekta.com

कैथल, सोमवार 4 मई, 2026

RNI-HRHIN/26/A1127

सूर्यास्त 07:02 | सूर्योदय 05:41

तापमान

अधिकतम 37° | न्यूनतम 25°

आपकी आवाज हमारी ताकत

आप कोई सामाजिक, धार्मिक आयोजन, प्रेस कॉन्फ्रेंस या किसी संस्था से जुड़ी कोई खबर, खुला नाला है, पानी से भरा गड्ढा है, रोड टूटी या गड्ढे हैं, हादसे का खतरा है इत्यादि खबरें हमारे साथ साझा करना चाहते हैं तो अब दूर नहीं। आपको केवल खबर और खबर से जुड़े चुनिंदा दो फोटो कैप्शन के साथ भेजना होगा। आपकी खबर को प्रमुखता से प्रकाशित किया जाएगा।

ऐसे भेजे

वॉट्सएप कर सकते हैं

9499422208

हमें QR स्कैन कर वेबसाइट पर भी भेज सकते हैं

स्टंबल लैब से बच्चों में खत्म होगा असफलता का डर

» खेल-खेल में सीखेंगे हार से जीत का रास्ता, प्रदेशभर में लागू करने की तैयारी

हिन्दुस्तान एकता » कैथल/पूंडरी

सरकारी स्कूलों में पढ़ने वाले बच्चों को मानसिक रूप से मजबूत बनाने और असफलता के डर से बाहर निकालने के लिए जिला प्रशासन ने 'स्टंबल लैब' प्रोजेक्ट शुरू किया है। डीसी अपराजिता की अगुवाई में चल रहे इस अनोखे अभियान के तहत बच्चों को यह सिखाया जा रहा है कि असफलता अंत नहीं, बल्कि सफलता की दिशा में एक जरूरी कदम है। तीन माह पहले शुरू हुई इस पहल के तहत जिला शिक्षा विभाग की टीम स्कूलों में विभिन्न गतिविधियों और प्रयोगों के माध्यम से बच्चों को व्यावहारिक तरीके से सीख दे रही है।

कक्षाओं में छोटे-छोटे प्रयोग कर बच्चों से अनुमान लगवाए जाते हैं और उनके सही-गलत जवाबों पर उनकी प्रतिक्रिया को समझा जाता है। इससे बच्चों में सीखने की उत्सुकता बढ़ रही है और वे असफलता से घबराने की बजाय उसे समझने लगे हैं। डीसी अपराजिता का मानना है कि जीवन में आने वाली बाधाओं (स्टंबल) को पहचान कर उन्हें दूर करने की आदत बचपन से विकसित की जाए तो बच्चे भविष्य में अधिक आत्मविश्वासी और मजबूत बनेंगे। इस प्रोजेक्ट के सकारात्मक परिणामों को देखते हुए मंत्री महिपाल ढांडा ने भी इसे पूरे प्रदेश में लागू करने की योजना की घोषणा की है।

प्रयोगों से बढ़ रहा आत्मविश्वास

बच्चों को घनत्व, अनुमान, समय का आकलन और रचनात्मक गतिविधियों के जरिए सिखाया जा रहा है कि गलतियां सीखने का हिस्सा हैं। हर कक्षा में सप्ताह में कम से कम एक गतिविधि करवाई जा रही है, जिससे बच्चों की भागीदारी और आत्मविश्वास दोनों बढ़ रहे हैं।

टीम कर रही जमीनी स्तर पर काम

जिला शिक्षा अधिकारी, बीईओ, विषय विशेषज्ञों और स्कूल स्टाफ की टीम इस प्रोजेक्ट को जमीन पर लागू कर रही है। साथ ही डेटा, वीडियो और निष्कर्ष भी एकत्रित किए जा रहे हैं, ताकि इसे और बेहतर बनाया जा सके।

क्या है 'स्टंबल लैब' प्रोजेक्ट?

- असफलता के डर को दूर करने की अनोखी पहल
- खेल-खेल में प्रयोगों के जरिए सीख
- हर कक्षा में साप्ताहिक गतिविधि अनिवार्य
- बच्चों को मानसिक रूप से मजबूत बनाना लक्ष्य
- पूरे प्रदेश में लागू करने की तैयारी

ऑपरेशन स्माइल

206 गुमशुदा लोगों को परिवार से मिलवाया

कलासो देवी » कैथल

मानव तस्करी के खिलाफ चलाए गए विशेष अभियान ऑपरेशन स्माइल के तहत कैथल पुलिस ने अप्रैल में उल्लेखनीय सफलता हासिल की। अभियान के दौरान पुलिस ने 206 गुमशुदा व्यक्तियों को खोजकर उनके परिजनों से मिलवाया। एसपी मनप्रीत सिंह सूदन ने बताया कि इनमें 43 बच्चे और 163 वयस्क महिला/पुरुष शामिल हैं। इसके अलावा भीख मांगने और बाल मजदूरी में लगे 15 बच्चों को भी रेस्क्यू कर उनके परिवारों से मिलवाया गया। अभियान का मुख्य उद्देश्य मानव तस्करी के प्रति जागरूकता बढ़ाना और संदिग्ध गतिविधियों की सूचना देने के लिए नागरिकों को प्रेरित करना है। एसपी ने कहा कि मानव तस्करी या गुमशुदगी से जुड़ी किसी भी संदिग्ध गतिविधि की सूचना तुरंत पुलिस को दें, ताकि समय रहते कार्रवाई की जा सके।

» 43 बच्चे और 163 वयस्क खोजे; 15 बाल मजदूर भी रेस्क्यू

ऐसे दें सूचना...

- नजदीकी पुलिस स्टेशन या चौकी में संपर्क करें।
- पुलिस कंट्रोल रूम या डायल 112 पर सूचना दें।
- सूचना देने वाले की पहचान गुप्त रखी जाएगी।
- मानव तस्करी के खिलाफ जागरूक बनें और सहयोग करें।

कुरुक्षेत्र में 16वीं जनगणना का पहला चरण हुआ शुरू

» 30 मई तक मकान सूचीकरण व एनपीआर अपडेट; मोबाइल ऐप से होगा डिजिटल सर्वे

हिन्दुस्तान एकता » कुरुक्षेत्र

अतिरिक्त उपायुक्त विवेक आर्य ने बताया कि जिले में 16वीं जनगणना का प्रथम चरण शुरू कर दिया गया है। इस चरण में 30 मई तक मकान सूचीकरण, आवासों की गणना और राष्ट्रीय जनसंख्या रजिस्टर (एनपीआर) को अपडेट करने का कार्य किया जाएगा।

इस दौरान प्रत्येक मकान की स्थिति, उपयोग, निर्माण सामग्री तथा पेयजल, बिजली, शौचालय और ईंधन जैसी मूलभूत सुविधाओं की जानकारी एकत्रित की जाएगी। जनगणना इस बार पूरी तरह डिजिटल माध्यम से होगी, जिसमें प्रगणक टैबलेट और स्मार्टफोन के जरिए डेटा एकत्रित करेंगे।

एडीसी ने अधिकारियों व कर्मचारियों को निर्देश दिए कि वे पूरी ईमानदारी और मेहनत से कार्य करें। सभी प्रगणक व पर्यवेक्षक घर-घर जाकर जानकारी जुटाएंगे और उन्हें पहचान पत्र भी जारी किए गए हैं। नागरिकों से अपील है कि वे सही और पूर्ण जानकारी दें। जनगणना अधिनियम 1948 के तहत जानकारी देना अनिवार्य है और सभी सूचनाएं गोपनीय रखी जाएंगी। उन्होंने कहा कि जनगणना के आंकड़े सरकार की योजनाओं, अनुदान और नीतियों के निर्माण का आधार होते हैं। दूसरा चरण फरवरी 2027 में होगा, जिसमें प्रत्येक व्यक्ति की सामाजिक, आर्थिक और जनसांख्यिकीय जानकारी जुटाई जाएगी।

जनगणना 2026 से जुड़ी मुख्य बातें...

- **प्रथम चरण:** 30 मई 2026 तक
- मकान सूचीकरण और एनपीआर अपडेट
- डिजिटल सर्वे: मोबाइल ऐप से डेटा संग्रह
- घर-घर जाकर प्रगणक जुटाएंगे जानकारी
- जानकारी देना कानूनी रूप से अनिवार्य
- सभी डेटा पूरी तरह गोपनीय रहेगा
- **दूसरा चरण:** फरवरी 2027 में होगा

न्यूज ब्रीफ

भाजपा ने 5 कार्यकर्ताओं को किया निष्कासित

पंचकूला » नगर निगम चुनाव के दौरान पार्टी विरोधी गतिविधियों के आरोप में भाजपा ने पांच कार्यकर्ताओं को प्राथमिक सदस्यता से निष्कासित कर दिया। जिला अध्यक्ष अजय मित्तल ने बताया कि निष्कासित कार्यकर्ताओं में वीनू राव, ओमवती पुनिया, सुखबीर पुनिया, भानु प्रताप और जसबीर बिड़लान शामिल हैं। इन पर पार्टी अधिकृत प्रत्याशियों के खिलाफ काम करने और निर्दलीय रूप में चुनाव लड़ने का आरोप है। उन्होंने कहा कि पार्टी अनुशासन से कोई समझौता नहीं होगा और सभी कार्यकर्ताओं को संगठन के निर्णयों का पालन करना होगा।

36 पुलिसकर्मियों को पदोन्नति, 7 कैथल से

कैथल » करनाल मंडल में कार्यरत 36 मुख्य सिपाहियों को सहायक उप निरीक्षक पद पर पदोन्नत किया गया है। अतिरिक्त पुलिस महानिदेशक डॉ. एम. रविकिरण ने यह पदोन्नति देते हुए सभी को उज्जवल भविष्य की शुभकामनाएं दीं। इनमें कैथल जिला पुलिस के 7 कर्मी भी शामिल हैं। एडीजीपी ने कहा कि पदोन्नति से कर्मचारियों का मनोबल बढ़ता है और वे अधिक निष्ठा व ईमानदारी से अपने कर्तव्यों का निर्वहन करते हुए कानून-व्यवस्था बनाए रखने में अहम भूमिका निभाएंगे।

विधायकों को संसदीय कार्यों का दिया प्रशिक्षण

हिन्दुस्तान एकता » चंडीगढ़

हरियाणा विधानसभा की ओर से सेक्टर-3 स्थित हरियाणा निवास में विधायकों के लिए प्रशिक्षण कार्यशाला आयोजित की गई। विधानसभा अध्यक्ष हरविन्द्र कल्याण के सानिध्य में हुए इस कार्यक्रम में 'संसदीय समितियां—सदस्यों की भूमिका' विषय पर विशेषज्ञों ने प्रशिक्षण दिया।

अध्यक्ष ने कहा कि विकसित भारत 2047 के लक्ष्य को पूरा करने के लिए लोकतांत्रिक संस्थाओं का मजबूत होना जरूरी है। उन्होंने विधायकों से नियमों और प्रक्रियाओं की बेहतर समझ के साथ जनहित में कार्य करने का आह्वान किया।

कार्यशाला में विशेषज्ञों ने संसदीय समितियों की भूमिका, बजट समीक्षा और जवाबदेही सुनिश्चित करने के महत्व पर प्रकाश डाला। इस मौके पर विधायकों के लिए एक मार्गदर्शन पुस्तिका भी जारी की गई। इस अवसर पर हरियाणा के संसदीय कार्य मंत्री महीपाल ढांडा, पंचायत एवं विकास मंत्री मंत्री कृष्ण लाल पंवार, बाल विकास मंत्री श्रुति चौधरी एवं बड़ी संख्या में विधायक, विधान सभा सचिव राजीव प्रसाद और विस अध्यक्ष के सलाहकार राम नारायण यादव समेत अनेक अधिकारी मौजूद रहे।

मई के लिए बिजली अदालत का शेड्यूल जारी

कैथल » उत्तर हरियाणा बिजली वितरण निगम कैथल के अधीक्षक अभियंता सोमबीर भालोठिया ने बताया कि मई माह में आयोजित होने वाली उपभोक्ता शिकायत निवारण बिजली अदालत की बैठक का शेड्यूल जारी कर दिया गया है। प्रत्येक सप्ताह के मंगलवार को सुबह 11 बजे से दोपहर 1 बजे तक यह बैठक आयोजित की जाएगी। इसमें बिजली उपभोक्ताओं की शिकायतों का निपटारा किया जाएगा। मई माह में 5, 12, 19 व 26 को आयोजित होगी। इस बैठक में बिजली संबंधी समस्याओं जैसे गलत बिल, गलत रीडिंग, खराब मीटर जिनका स्थानीय अधिकारियों एसडीओ और एक्सईएन से मिलने के बाद भी कोई समाधान नहीं हो पा रहा, ऐसे सभी उपभोक्ता अपनी समस्याओं को इस बिजली अदालत के समक्ष रख सकते हैं।

पद्म पुरस्कार 2027 के लिए 31 जुलाई तक करें ऑनलाइन नामांकन

» गणतंत्र दिवस 2027 पर की जाएगी पद्म विभूषण, पद्म भूषण व पद्मश्री की घोषणा

हिन्दुस्तान एकता » कुरुक्षेत्र

गणतंत्र दिवस 2027 पर घोषित होने वाले पद्म पुरस्कारों- पद्म विभूषण, पद्म भूषण और पद्मश्री के लिए ऑनलाइन नामांकन आमंत्रित किए गए हैं। इसके लिए अंतिम तिथि 31 जुलाई 2026 निर्धारित की गई है। सभी नामांकन एवं अनुशंसाएं केवल राष्ट्रीय पुरस्कार पोर्टल के माध्यम से ही ऑनलाइन स्वीकार की जाएंगी। नामांकन के साथ अधिकतम 800 शब्दों का प्रशस्ति-पत्र भी अनिवार्य है, जिसमें संबंधित व्यक्ति की उपलब्धियों और सेवाओं का स्पष्ट उल्लेख होना चाहिए। महिलाओं, अनुसूचित जाति-जनजाति, दिव्यांगजनों और समाजसेवा में जुटे व्यक्तियों में से योग्य प्रतिभाओं की पहचान कर उन्हें आगे लाना जरूरी है, ताकि वास्तविक हकदारों को सम्मान मिल सके।

बता दें कि पद्म पुरस्कार देश के सर्वोच्च नागरिक सम्मानों में शामिल हैं, जिनकी शुरुआत वर्ष 1954 में हुई थी और हर वर्ष गणतंत्र दिवस पर इनकी घोषणा की जाती है।

पद्म पुरस्कार से जुड़ी मुख्य बातें

- **तीन श्रेणियां:** पद्म विभूषण, पद्म भूषण, पद्मश्री
- **अंतिम तिथि:** 31 जुलाई 2026
- केवल ऑनलाइन आवेदन मान्य
- 800 शब्दों का प्रशस्ति-पत्र अनिवार्य
- कला, खेल, विज्ञान, समाजसेवा सहित कई क्षेत्रों में दिए जाते हैं
- सभी वर्गों के योग्य व्यक्ति पात्र
- सरकारी उपक्रमों के कर्मचारी (डॉक्टर/वैज्ञानिक छोड़कर) पात्र नहीं

सेवा-सद्भावना के रूप में मनाया जाएगा गीता मनीषी स्वामी ज्ञानानंद महाराज का जन्मोत्सव

कुरुक्षेत्र » गीता मनीषी स्वामी ज्ञानानंद महाराज के जन्म दिवस (15 मई) को सेवा और सद्भावना के रूप में मनाने का निर्णय लिया गया है। इसको लेकर श्री कृष्ण कृपा गौशाला में प्रधान सुनील वत्स के नेतृत्व में श्री कृष्ण कृपा गौशाला समिति एवं जीओ गीता कुरुक्षेत्र की बैठक आयोजित हुई, जिसमें विभिन्न कार्यक्रमों की रूपरेखा तैयार की गई।

प्रधान सुनील वत्स ने बताया कि इस पावन अवसर पर श्री राधा जागरण उत्सव के साथ-साथ कई धार्मिक एवं सामाजिक गतिविधियों का आयोजन किया जाएगा। गीता ज्ञान संस्थानम् कुरुक्षेत्र स्थित श्री कृष्ण कृपा गौशाला परिसर में 15 मई को गऊमाता-गोपाल जी की मूर्ति स्थापना का कार्य स्वामी ज्ञानानंद महाराज द्वारा सम्पन्न कराया जाएगा। मूर्ति स्थापना से पूर्व 13 मई से 15 मई तक प्रतिदिन प्रातः एवं सायंकाल विधिवत पूजन होगा, जबकि 15 मई को प्रातः मूर्ति प्राण प्रतिष्ठा संपन्न होगी। सेवा कार्यों की कड़ी में 10 मई को गीता ज्ञान संस्थानम् परिसर में ब्लड बैंक कुरुक्षेत्र व मेदांता हॉस्पिटल के सहयोग से सुबह 9 बजे से दोपहर 1 बजे तक रक्तदान शिविर आयोजित किया जाएगा, जिसका शुभारंभ स्वयं स्वामी ज्ञानानंद महाराज करेंगे।

पंचकूला चुनाव में भाजपा की जीत का दावा

पंचकूला » जनसभा को संबोधित करते हुए मुख्यमंत्री नायब सिंह सैनी ने नगर निगम चुनाव को शहर के भविष्य के लिए महत्वपूर्ण अवसर बताया। उन्होंने कहा कि भाजपा शहर को कंक्रीट का जंगल नहीं, बल्कि स्वच्छ, हरित व संतुलित विकास वाला आदर्श शहर बनाना चाहती है। मुख्यमंत्री ने पार्टी के मेयर प्रत्याशी श्याम लाल बंसल और अन्य वार्ड उम्मीदवारों को भारी बहुमत से जिताने की अपील की।

नेचर कैंप में विद्यार्थियों ने सीखा प्रकृति से जुड़ाव

हिन्दुस्तान एकता » पंचकूला

संत लोंगोवाल इंस्टीट्यूट ऑफ इंजीनियरिंग एंड टेक्नोलॉजी के विद्यार्थियों ने थापली में आयोजित तीन दिवसीय नेचर कैंप को उत्साह और अनुशासन के साथ सफलतापूर्वक पूरा किया।

कैंप के दौरान ट्रेकिंग, प्रकृति अवलोकन और पर्यावरण जागरूकता गतिविधियों के जरिए विद्यार्थियों को प्राकृतिक वातावरण से जोड़ने के साथ टीमवर्क, नेतृत्व और आत्मनिर्भरता के गुण सिखाए गए। विद्यार्थियों ने सूर्योदय-सूर्यास्त के मनोहारी दृश्यों का आनंद लिया और इस अनुभव को यादगार बताया। संस्थान ने इस सफल आयोजन के लिए सभी प्रतिभागियों और आयोजकों की सराहना की।

ज्ञान भारतम् मिशन » प्राचीन धरोहरों के संरक्षण के लिए तेजी से कार्य के निर्देश

10 जून तक पूरा करें पांडुलिपि सर्वेक्षण: एडीसी

कलासो देवी » कैथल

एडीसी सुशील कुमार ने निर्देश दिए कि जिले में चल रहे राष्ट्रीय पांडुलिपि सर्वेक्षण को निर्धारित समय सीमा 10 जून तक हर हाल में पूरा किया जाए। यह कार्य सभी संबंधित विभागों की जिम्मेदारी है और इसे आपसी तालमेल के साथ तेजी से पूरा किया जाए। एडीसी जिला स्तरीय समिति की बैठक को संबोधित कर रहे थे। बताया कि अभियान के तहत 75 वर्ष से अधिक पुराने पांडुलिपियों और अभिलेखीय दस्तावेजों की पहचान कर उनका दस्तावेजीकरण और डिजिटल रिकॉर्ड तैयार किया जाएगा, जिसे 'ज्ञान भारतम् मिशन' पोर्टल पर अपलोड किया जाएगा। यह पहल जिले की ऐतिहासिक और सांस्कृतिक धरोहर को संरक्षित करने की दिशा में एक महत्वपूर्ण कदम है।

उपमंडल स्तर पर टीमों का गठन

एडीसी ने निर्देश दिए कि सभी एसडीएम अपने-अपने क्षेत्रों में नोडल अधिकारी के रूप में कार्य करते हुए उपमंडल स्तर पर टीमों का गठन करें। ये टीमें पांडुलिपियों का सत्यापन, मैपिंग और डेटा संग्रहण सुनिश्चित करेंगी।

जन जागरूकता पर जोर

हर घर दस्तक अभियान के माध्यम से आमजन को इस सर्वेक्षण के प्रति जागरूक किया जाए। साथ ही अभिलेख दान अभियान के जरिए लोगों को स्वेच्छा से जानकारी साझा करने के लिए प्रेरित किया जाए, ताकि अधिक से अधिक प्राचीन धरोहरों की पहचान हो सके।

ऐसे दें पांडुलिपि की जानकारी...

- पांडुलिपियां मालिक के पास ही सुरक्षित रहेंगी
- सरकार केवल उनका रिकॉर्ड तैयार करेगी
- 'ज्ञान भारतम्' ऐप के जरिए स्वयं जानकारी दर्ज कर सकते हैं
- ग्राम सचिव के माध्यम से भी सूचना दी जा सकती है
- प्रशासन ने नागरिकों से सहयोग की अपील की

समाधान शिविर शिकायतों का समयबद्ध निपटान जरूरी: एडीसी

कलासो देवी » कैथल

एडीसी सुशील कुमार ने अधिकारियों को निर्देश दिए कि समाधान शिविर में प्राप्त शिकायतों का समयबद्ध और स्थायी समाधान सुनिश्चित किया जाए। उन्होंने कहा कि कोई भी शिकायत लंबित न रहे और सभी विभाग गंभीरता व जवाबदेही के साथ कार्य करें। बैठक में लंबित मामलों की समीक्षा करते हुए एडीसी ने अधिकारियों से प्रगति रिपोर्ट ली और समाधान प्रकोष्ठ पोर्टल पर शिकायतों की नियमित मॉनिटरिंग के निर्देश दिए। उन्होंने कहा कि हर शिकायत के निपटान के बाद स्पष्ट और प्रमाणिक रिपोर्ट पोर्टल पर अपलोड करना अनिवार्य है, ताकि पारदर्शिता बनी रहे।

सुविचार

"अपने स्वभाव के प्रति सच्चा होना ही सबसे बड़ा धर्म है।"

संपादकीय

युवाओं में बढ़ता तनाव और मानसिक स्वास्थ्य संकट

आज का युवा वर्ग जितना सक्षम, तकनीकी रूप से दक्ष और अवसरों से जुड़ा हुआ दिखाई देता है, उतना ही वह भीतर से तनाव, चिंता और मानसिक दबाव से जूझता भी नजर आता है। शिक्षा, करियर, प्रतिस्पर्धा और सोशल मीडिया के बढ़ते प्रभाव ने युवाओं के जीवन को लगातार चुनौतीपूर्ण बना दिया है। मानसिक स्वास्थ्य संकट अब केवल व्यक्तिगत समस्या नहीं, बल्कि एक गंभीर सामाजिक मुद्दा बन चुका है।

शिक्षा प्रणाली में बढ़ती प्रतिस्पर्धा युवाओं पर सबसे अधिक दबाव डालती है। अच्छे अंक, प्रतिष्ठित संस्थान में प्रवेश और नौकरी पाने की दौड़ में कई बार विद्यार्थी मानसिक थकान का शिकार हो जाते हैं। परीक्षा का डर, असफलता का भय और परिवार की अपेक्षाएं मिलकर उनके मन पर भारी बोझ बना देते हैं। कई बार यह दबाव अवसाद और चिंता जैसी समस्याओं में बदल जाता है।

इसके साथ ही सोशल मीडिया ने भी युवाओं के मानसिक स्वास्थ्य पर गहरा प्रभाव डाला है। इंस्टाग्राम, फेसबुक और अन्य प्लेटफॉर्म पर दिखने वाली 'परफेक्ट लाइफ' की छवियां वास्तविकता से अलग होती हैं, लेकिन युवा खुद की तुलना उनसे करने लगते हैं। इससे आत्मविश्वास में कमी, अकेलापन और असंतोष बढ़ता है। लगातार ऑनलाइन रहने की आदत नींद की कमी और मानसिक अस्थिरता को भी जन्म देती है। करियर को लेकर अनिश्चितता भी एक बड़ा कारण है। आज के समय में नौकरी की स्थिरता पहले जैसी नहीं रही। बदलते उद्योग, तकनीकी बदलाव और प्रतिस्पर्धा ने युवाओं के भविष्य को असुरक्षित बना दिया है। इस असुरक्षा का सीधा असर उनके मानसिक संतुलन पर पड़ता है।

परिवार और समाज की अपेक्षाएं भी इस समस्या को बढ़ाती हैं। अक्सर माता-पिता अपने बच्चों से बहुत अधिक उम्मीदें रखते हैं, जो कभी-कभी दबाव का रूप ले लेती हैं। युवा अपनी भावनाओं को खुलकर व्यक्त नहीं कर पाते, जिससे वे अंदर ही अंदर तनाव को सहते रहते हैं।

इस स्थिति में सबसे जरूरी है मानसिक स्वास्थ्य के प्रति जागरूकता बढ़ाना। स्कूलों और कॉलेजों में काउंसलिंग सिस्टम को मजबूत किया जाना चाहिए। युवाओं को यह समझाना जरूरी है कि असफलता जीवन का अंत नहीं, बल्कि सीखने का एक हिस्सा है। साथ ही परिवारों को भी अपने बच्चों पर अनावश्यक दबाव डालने से बचना चाहिए और उनके साथ संवाद बढ़ाना चाहिए।

योग, ध्यान और नियमित शारीरिक गतिविधियां मानसिक स्वास्थ्य को बेहतर बनाने में मदद कर सकती हैं। इसके अलावा समाज में मानसिक स्वास्थ्य को लेकर फैली भ्रांतियों को दूर करना भी जरूरी है, ताकि युवा बिना झिझक अपनी समस्याएं साझा कर सकें। अंततः, युवाओं का मानसिक स्वास्थ्य किसी भी देश के भविष्य की नींव है। यदि हम उन्हें भावनात्मक रूप से मजबूत और सुरक्षित वातावरण देंगे, तभी वे आत्मविश्वास के साथ आगे बढ़ सकेंगे और एक स्वस्थ समाज का निर्माण कर पाएंगे।

शॉर्ट फिल्मों से निर्देशन का रास्ता आसान

अनिल कुमार यादव
(सहायक प्राध्यापक खेल विश्वविद्यालय हरियाणा, राई।)

डिजिटल युग में फिल्म निर्माण की दुनिया में शॉर्ट फिल्मों ने एक सशक्त और व्यावहारिक माध्यम के रूप में अपनी पहचान बनाई है, जिसने उभरते निर्देशकों के लिए नए अवसरों के द्वार खोल दिए हैं। पहले जहाँ निर्देशन के क्षेत्र में प्रवेश करना संसाधनों, बड़े बजट और स्थापित नेटवर्क पर निर्भर करता था, वहीं आज शॉर्ट फिल्में सीमित संसाधनों में रचनात्मक अभिव्यक्ति का प्रभावी मंच प्रदान कर रही हैं। कम समय और लागत में तैयार होने वाली ये फिल्में नए निर्देशकों को कहानी कहने की कला, कैमरा एंगल, एडिटिंग और दर्शकों की समझ विकसित करने का अवसर देती हैं। साथ ही, डिजिटल प्लेटफॉर्म जैसे यूट्यूब और इंस्टाग्राम ने इन फिल्मों को वैश्विक दर्शकों तक पहुँचाने का मार्ग आसान बना दिया है, जिससे प्रतिभाशाली युवाओं को पहचान मिलने लगी है।

शॉर्ट फिल्मों का एक महत्वपूर्ण पक्ष यह भी है कि वे प्रयोग और नवाचार के लिए खुला मंच प्रदान करती हैं। नए निर्देशक बिना किसी बड़े जोखिम के विभिन्न विषयों, शैलियों और तकनीकों पर काम कर सकते हैं, जिससे उनकी रचनात्मक क्षमता का विकास होता है। इसके अलावा, कई प्रतिष्ठित फिल्म समारोह जैसे कांस फ़िल्म और अन्य फेस्टिवल में भी शॉर्ट फिल्मों को विशेष स्थान दिया जाता है, जो नए फिल्मकारों को अंतरराष्ट्रीय पहचान दिलाने में सहायक होता है। भारतीय संदर्भ में भी कई निर्देशकों ने शॉर्ट फिल्मों से शुरुआत कर बड़े पर्दे तक अपनी पहचान बनाई है, जो इस माध्यम की उपयोगिता को सिद्ध करता है। शॉर्ट फिल्में न केवल तकनीकी कौशल को विकसित करती हैं, बल्कि सामाजिक मुद्दों को प्रभावी ढंग से प्रस्तुत करने का माध्यम भी बनती हैं। आज के समय में, जब हर युवा के हाथ में स्मार्टफोन और इंटरनेट उपलब्ध है, निर्देशन का सपना अब दूर नहीं रहा। इस प्रकार, शॉर्ट फिल्में वास्तव में निर्देशन की दुनिया में प्रवेश का एक सरल, सुलभ और प्रभावी रास्ता बन चुकी हैं, जो आने वाले समय में भारतीय सिनेमा को नई ऊंचाइयों तक ले जाने में महत्वपूर्ण भूमिका निभाएंगी।

(यह लेखक के निजी विचार है)

हाल अच्छा है-सबसे बड़ा भावनात्मक झूठ

आर.जे. रेखा
क्रिस्टल वॉयस आकाशवाणी FM गोल्ड

दूर से हाल जो पूछो, हाल हमारा अच्छा है। पास बैठकर कह लेंगे जब अपना हाल सुनाओगे।— यह लाइन आज दिल्ली-एनसीआर ही नहीं बड़े शहरों के लाखों घरों की सच्चाई बन चुकी है। 72 साल के राम किशन शाम 6 बजे फोन उठाते हैं। अमेरिका से बेटे का वीडियो कॉल है। पापा, खाना खाया? बीपी चेक कराया? वो मुस्कुराकर कहते हैं, हाँ बेटा, सब बढ़िया। तू टेंशन मत ले। कॉल खत्म होता है और फ्लैट में सन्नाटा फिर से लौट आता है। टीवी की आवाज़ तेज़ कर देते हैं, ताकि अपनी सांसों की आवाज़ न सुननी पड़े। यह अकेलापन कोई गांव या शहर की कहानी नहीं। यह डिजिटल इंडिया के उस पहलू की कहानी है जहाँ हम सब कनेक्ट हैं, पर जुड़े हुए नहीं हैं।

1 अकेलेपन का नया चेहराः डिजिटल भीड़ में तन्हाई... पहले बुजुर्गों का अकेलापन दिखता था। घर खाली होता था, दरवाज़े पर कोई दस्तक नहीं देता था। आज अकेलापन 'वेल-ड्रेस्ड' है। घर भरा हुआ है — बहू, बेटा, पोते — सब एक ही छत के नीचे। पर सब अपनी-अपनी स्क्रीन में। दादा हॉल में बैठे हैं, पोता बगल में बैठकर रील देख रहा है। दोनों के बीच 1 फीट का फ़ासला है, पर बात करने के लिए 1000 किलोमीटर का।

- ऐसे अनेकों बुज़ुर्ग अक्सर पार्कों में सुबह अकेले बैठे मिल जाते हैं जो कहते हैं कि वो अपने परिवार के साथ रहते हुए भी अकेला महसूस करते हैं क्योंकि 'साथ रहना' और 'साथ होना' में फ़र्क होता है। हमने घर तो बड़ा कर लिया, वक़्त छोटा कर दिया।
- बेटे-बहू सुबह ऑफिस भागते हैं। शाम को थके हारे लौटते हैं। पापा, चाय? नहीं बेटा, तुम आराम करो। यह 'नहीं' बोलकर वो अपनी ज़रूरत को मार देते हैं। क्योंकि उन्हें लगता है कि अपनी बात रखना मतलब 'बोझ' बनना है। और बच्चे भी 'ठीक है, पापा' कहकर कमरे में घुस जाते हैं। रिश्तों में यह 'फॉर्मेलिटी' का ज़हर धीरे-धीरे घुल रहा है।

2 'अच्छा है' के पीछे छुपा दर्द... हाल अच्छा है — यह जुमला बुज़ुर्गों की ढाल बन गया है। उन्हें डर लगता है कि अगर उन्होंने कह दिया बेटा, आज दिल नहीं लग रहा तो सामने वाला परेशान हो जाएगा। कनाडा में रहने वाली बेटी की नींद खराब होगी। गुड़गांव में जॉब करने वाले बेटे का मीटिंग का फोकस टूटेगा। इसलिए वो अपना दर्द पी जाते हैं।

- 75 साल की एक बुज़ुर्ग महिला कहती हैं, जब भी बेटा पूछता है 'मम्मी कैसी हो', मैं कहती हूं 'मैं मज़े में हूँ। सच बोलूँ तो मेरा पूरा दिन उसकी फोटो देखकर गुज़र जाता है। पर यह बात बोलूंगी तो वो दुखी होगा। उसका दिल दुखाना है क्या?₹
- यह 'मज़े में हूँ' वाला झूठ सबसे खतरनाक है। क्योंकि यह हमें यह भ्रम देता है कि सब ठीक है। जबकि असल में बुज़ुर्ग अंदर ही अंदर घुट रहे हैं। आजकल अनेकों बुजुर्ग लोग डिप्रेशन के शिकार हैं। और सबसे बड़ा कारण हैः 'इमोशनल नेगलेक्ट'। पैसे की कमी नहीं, दवा की कमी नहीं। कमी है तो सिर्फ दो कान की, जो बिना जज किए उनकी बात सुन लें।

3 हम क्यों नहीं बैठ पाते पास? सवाल हमसे है। हमारी जेनरेशन के पास सब कुछ है — 5G, स्मार्ट टीवी, स्विगी, ज़ेप्टो। बस 10 मिनट नहीं हैं। हमारे पास रील देखने का वक़्त है, पर माँ के पुराने एल्बम देखने का वक्त नहीं। हमारे पास ऑफिस की कॉल अटेंड करने का पेशेंस है, पर पापा की 'वो ज़माने की बात' सुनने का पेशेंस नहीं।

- हम कहते हैं अभी काम में हूँ, बाद में बात करते हैं। पर यह 'बाद में' कभी आता नहीं। बुज़ुर्गों की उम्र 'बाद में' का इंतज़ार नहीं कर सकती। आज 80 साल का इंसान अगले साल 81 का होगा भी या नहीं, कोई नहीं जानता।
- डिजिटल दुनिया ने हमें 'इंस्टेंट' का आदी बना दिया। मगर रिश्ते 'इंस्टेंट' नहीं होते। उन्हें धीरे धीरे प्यार की धीमी सेक पर संभालना पड़ता है। चाय की तरह। 2 मिनट पास बैठकर, बिना फोन के। सिर्फ आँखों में देखकर पूछनाः आज सच बताओ, हाल कैसा है?

4 अकेलापन सिर्फ बुजुर्गों की प्रॉब्लम नहीं... यह हमारी आने वाली प्रॉब्लम है। जो कुछ हम आज अपने माता पिता के साथ कर रहे हैं, कल वही हमारे साथ होगा। आज हम पापा को 'बोरिंग' समझ कर इग्नोर कर रहे हैं, कल हमारा बेटा हमें 'क्रिंज' बोलेगा।

- जापान में 'कोडोकुशी' शब्द है — अकेलेपन से मौत। वहाँ हज़ारों बुजुर्ग अपने फ्लैट में अकेले मर जाते हैं, और महीनों बाद पता चलता है। आज भारत के कई शहर भी उसी तरफ़ बढ़ रहे है। हाई-राइज़ सोसाइटी, बंद दरवाज़े, और हर घर में एक बुजुर्ग जो अपनी दवा का अलार्म खुद लगाता है, खुद उठकर खाता है। क्योंकि घर में सब हैं, पर कोई है नहीं।

5 सॉल्यूशनः 'गुफ़्तगू' वापस लाओ... सरकार डे-केयर सेंटर खोल सकती है।ओल्ड एज होम खोल सकती है। NGO हेल्पलाइन चला सकती है। पर अकेलेपन की दवा कोई गोली नहीं। उसकी दवा है 'वक्त'। और वो सिर्फ हम दे सकते हैं अपने बुजुर्गों को।

क्या कर सकते हैं? छोटी शुरुआतः

- **'नो फोन' चाय टाइम...** दिन में 15 मिनट। सिर्फ 15 मिनट। रात को खाने के बाद। सबका फोन दूर। बस चाय और बातें। पूछोः आज मोहल्ले में क्या हुआ? आपके ज़माने में दिवाली कैसी होती थी? उनकी आँखें चमक जाएँगी।
- **'यादों का डब्बा':** उनके पुराने फोटो, लेटर, कैसेट निकलवाओ। साथ बैठकर देखो। यह फोटो कब की है, माँ? बस यह सवाल पूछने की देर है, कहानियों का सिलसिला शुरू हो जाएगा।
- **छोटी ज़िम्मेदारी दोः** पापा, आज शाम का मेन्यू आप डिसाइड करो। दादी, यह वाला पौधा कहाँ रखें? जब उन्हें लगेगा कि घर में उनकी 'ज़रूरत' है, अकेलापन आधा खत्म हो जाता है।
- **पड़ोस से रिश्ता जोड़ोः** सोसाइटी में और भी बुजुर्ग होंगे। उनका एक 'चाय ग्रुप' बनवाओ। हफ्ते में 2 दिन 1 घंटा। इंसान को इंसान की ज़रूरत होती है।
- **'दूर से' के साथ 'दिल से':** अगर दूर हो तो रोज़ 2 मिनट का वॉइस नोट भेजो। माँ, आज ऑफिस में यह हुआ। कॉल का वेट मत करो। अपनी तरफ से 'प्रेज़ेंस' फील कराओ।

अंतिम बातः हाल पूछने का हक़ कमाना पड़ता है... बुजुर्ग 'अच्छा है' इसलिए नहीं कहते क्योंकि वो झूठ बोलते हैं। वो इसलिए कहते हैं क्योंकि उन्हें लगता है हमारा 'बुरा हाल' सुनने का वक्त किसी के पास नहीं।

'हाल' पूछने का हक़ हमें कमाना पड़ेगा। रोज़ थोड़ा सा बैठकर, बिना घड़ी देखे, बिना फोन उठाए। जब उन्हें यकीन हो जाएगा कि हमारा 'ठीक नहीं हूँ' सुनके हम उनसे दूर भागेंगे नहीं, डाँटेंगे नहीं, बिज़ी नहीं बोलेंगे — तब वो असल हाल बताएंगे। वरना यह लाइन सच होती रहेगीः दूर दूर से हाल जो पूछो हाल हमारा अच्छा है और हम एक ऐसी जेनरेशन बन जाएंगे जिन्होंने अपने बुजुर्गों को 'अच्छा है' के झूठ में जीना और मरना सिखा दिया।

आज शाम घर जाओ। फोन साइड में रखो। माँ-बाप के पास बैठो। और सिर्फ इतना पूछो, सच बताओ, आज दिल कैसा है?

यकीन मानो, उनकी आँख का वो गीला कोना, आपकी ज़िंदगी की सबसे बड़ी दौलत होगा।

और सबसे अच्छी बात तो तब होगी जब "ओल्ड एज एट ओल्ड एज होम"नहीं बल्कि "ओल्ड एज एट होम" होंगे।

(यह लेखिका के निजी विचार है)

कंटेंट निर्माण से डिजिटल समझ तक की अनिवार्य यात्रा

दीपक अरोड़ा
सहायक प्राध्यापक, सी.आर.एस.यू, जींद

भारत का विकास केवल आर्थिक सूचकांकों या तकनीकी प्रगति की कहानी नहीं है, बल्कि यह सामाजिक चेतना और ज्ञान-परक परिवर्तन की भी एक सतत प्रक्रिया है। कृषि युग से औद्योगिक युग, फिर सूचना युग और अब डिजिटल युग तक की यह यात्रा इस बात का प्रमाण है कि भारत ने समय के साथ स्वयं को लगातार नए दृष्टिकोण, संदर्भ या अर्थ के अनुसार फिर से परिभाषित किया है। आज देश डिजिटल परिदृश्य में तेजी से आगे बढ़ रहा है, लेकिन इस तीव्र विस्तार के बीच एक मूलभूत प्रश्न उभरता है। क्या हम केवल कंटेंट का उत्पादन कर रहे हैं या उसके अर्थ, प्रभाव और उत्तरदायित्व को भी समझ रहे हैं।

डिजिटल क्रांति ने भारत को अभूतपूर्व अवसर प्रदान किए हैं। सस्ती इंटरनेट सेवाएँ, स्मार्टफोन की सरल और व्यापक उपलब्धता और भारत की युवा शक्ति ने देश को विश्व के सबसे बड़े डिजिटल उपभोक्ता और उभरते कंटेंट उत्पादक के रूप में स्थापित किया है। परंतु यह वृद्धि केवल मात्रा तक सीमित न रह जाए, इसके लिए गुणवत्ता और समझ का संतुलन आवश्यक है। यही वह बिंदु है, जहाँ डिजिटल मीडिया साक्षरता एक निर्णायक कारक के रूप में उभरती है। सरकार द्वारा ऑरेंज इकोनॉमी को बढ़ावा देना इस दिशा में एक महत्वपूर्ण पहल है, जो रचनात्मकता और डिजिटल नवाचार को आर्थिक विकास से जोड़ता है। प्रेस सूचना ब्यूरो के अनुसार केंद्रीय बजट 2026-27 में 15,000 स्कूलों और 500 कॉलेजों में ए.वी.जी.सी. (एनीमेशन, विजुअल इफेक्ट्स, गेमिंग और कॉमिक्स) कंटेंट क्रिएटर लैब्स स्थापित करने हेतु 250 करोड़ रुपये का प्रावधान किया गया है। मुंबई स्थित भारतीय रचनात्मक प्रौद्योगिकी संस्थान (आई.आई.सी.टी.) को इसके क्रियान्वयन की जिम्मेदारी सौंपी गई है। इसके साथ ही ए.वी.जी.सी.-एक्स आर क्षेत्र में 2030 तक लगभग 20 लाख कुशल पेशेवरों की आवश्यकता का अनुमान इस क्षेत्र की व्यापक संभावनाओं को रेखांकित करता है। वेव्स 2025 और वेब एक्स जैसे मंच क्रिएट इन इंडिया, क्रिएट फॉर द वर्ल्ड के दृष्टिकोण को साकार करने की दिशा में महत्वपूर्ण भूमिका निभा रहे हैं।

हालांकि, यह स्वीकार करना होगा कि केवल विकास के लिए जरूरी बुनियादी सुविधाएं और संरचना, निवेश और तकनीकी संसाधन ही गुणवत्तापूर्ण कंटेंट की गारंटी नहीं दे सकते। कंटेंट निर्माण सिर्फ एक तकनीकी प्रक्रिया मात्र नहीं है बल्कि एक बौद्धिक और नैतिक दायित्व भी है। यदि नई पीढ़ी के कंटेंट क्रिएटर्स में तथ्यपरकता, आलोचनात्मक सोच और सामाजिक उत्तरदायित्व की समझ का अभाव रहेगा, तो डिजिटल विस्तार के बावजूद सूचना की गुणवत्ता संदिग्ध बनी रहेगी। यही कारण है कि डिजिटल मीडिया साक्षरता को केवल एक पूरक कौशल के रूप में नहीं, बल्कि शिक्षा के केंद्रीय तत्व के रूप में देखा जाना चाहिए।

डिजिटल मीडिया साक्षरता का उद्देश्य केवल सूचना तक पहुँच प्रदान करना नहीं है, बल्कि उस सूचना का विवेकपूर्ण विश्लेषण करना भी है। यह नागरिकों विशेषकर युवाओं को यह सिखाती है कि वे सूचना के स्रोत की विश्वसनीयता को परखें, उसकी मंशा को समझें और उसके सामाजिक प्रभावों का मूल्यांकन करें। यह कौशल उन्हें निष्क्रिय उपभोक्ता से सक्रिय, जागरूक और जिम्मेदार नागरिक के रूप में स्थापित करता है। विशेष रूप से ऐसे समय में, जब एल्गोरिदम-आधारित प्लेटफॉर्म उपयोगकर्ताओं की सोच और व्यवहार को प्रभावित कर रहे हैं तब डिजिटल साक्षरता एक लोकतांत्रिक आवश्यकता बन जाती है। आज के दौर में शिक्षा प्रणाली में डिजिटल मीडिया साक्षरता का समावेश अब विलंबित नहीं किया जा सकता। इसे प्राथमिक स्तर से ही पाठ्यक्रम का हिस्सा बनाना होगा, ताकि बच्चों में शुरुआत से ही सही और गलत की पहचान विकसित हो सके। माध्यमिक और उच्च माध्यमिक स्तर पर फेक न्यूज़, डेटा गोपनीयता, साइबर सुरक्षा और एल्गोरिदम पूर्वाग्रह जैसे जटिल विषयों को शिक्षा केबरुओ में शामिल करना आवश्यक है। यह एक सतत और बहु-स्तरीय प्रक्रिया होनी चाहिए, न कि किसी एक पाठ्यक्रम या कार्यशाला तक सीमित प्रयास के रूप में। इस दिशा में जनसंचार और पत्रकारिता संस्थानों की भूमिका अत्यंत महत्वपूर्ण हो सकती है। क्योंकि ये संस्थान न केवल मीडिया नैतिकता और तथ्य-जांच के सिद्धांत सिखाते हैं, बल्कि नागरिकों में जिम्मेदार अभिव्यक्ति की संस्कृति भी विकसित करते हैं। यदि ये संस्थान स्कूलों और महाविद्यालयों के साथ साझेदारी कर प्रशिक्षण कार्यक्रम, कार्यशाला और जागरूकता अभियान चलाएं, तो डिजिटल मीडिया साक्षरता को व्यापक स्तर पर सुदृढ़ किया जा सकता है। भारत में 80 करोड़ से अधिक इंटरनेट उपयोगकर्ताओं की उपस्थिति इस परिवर्तन की व्यापकता को दर्शाती है।

(यह लेखक के निजी विचार है)

आरक्षण की बहसः समान अवसर, सामाजिक न्याय

डॉ. सत्यवान सौरभ
कवि, सामाजिक विचारक एवं स्तंभकार, आकाशवाणी एवं टीवी पेनालिस्ट

भारत में आरक्षण पर बहस कोई नई नहीं है, लेकिन समय-समय पर यह मुद्दा नई परिस्थितियों और घटनाओं के कारण फिर से केंद्र में आ जाता है। हाल के दिनों में उच्च शिक्षा और संस्थागत नीतियों को लेकर University Grants Commission (UGC) से जुड़े विवादों ने इस चर्चा को और तेज कर दिया है। एक ओर ऐसे लोग हैं जो मानते हैं कि अब जातिगत आरक्षण की प्रासंगिकता कम हो चुकी है, वहीं दूसरी ओर एक बड़ा वर्ग इसे सामाजिक न्याय और समान अवसर के लिए अब भी आवश्यक मानता है। इस जटिल बहस को समझने के लिए जरूरी है कि हम भावनात्मक प्रतिक्रियाओं से हटकर इसके ऐतिहासिक, सामाजिक और आर्थिक आयामों पर गंभीरता से विचार करें।

सबसे पहले यह समझना होगा कि आरक्षण की मूल भावना क्या थी। भारतीय समाज सदियों तक गहरी सामाजिक असमानताओं से जूझता रहा है। कुछ वर्गों को शिक्षा, संसाधनों और सम्मानजनक जीवन से व्यवस्थित रूप से वंचित रखा गया। यह केवल आर्थिक अभाव का प्रश्न नहीं था, बल्कि सामाजिक बहिष्कार और अवसरों की असमानता का भी था। इसी पृष्ठभूमि में संविधान निर्माताओं ने आरक्षण को एक अस्थायी उपाय के रूप में लागू किया, ताकि समाज के वंचित वर्गों को मुख्यधारा में लाया जा सके और उन्हें बराबरी का अवसर मिल सके।

हालांकि, आज का भारत 70–75 साल पहले के भारत से काफी अलग है। शिक्षा का विस्तार हुआ है, शहरीकरण बढ़ा है और नई पीढ़ी के सामने अवसरों के नए द्वार खुले हैं। यही कारण है कि कुछ लोग यह सवाल उठाते हैं कि क्या आज भी वही नीतियाँ लागू रहनी चाहिए जो दशकों पहले बनाई गई थीं। उनका तर्क है कि अब हर जाति के लोग विभिन्न क्षेत्रों में कार्यरत हैं, इसलिए आरक्षण का आधार केवल जाति नहीं होना चाहिए। वे यह भी कहते हैं कि सवर्ण समाज में भी बड़ी संख्या में आर्थिक रूप से कमजोर लोग हैं, जिनके लिए अवसरों की कमी उतनी ही वास्तविक है। यह तर्क पूरी तरह निराधार नहीं है। वास्तव में, आर्थिक असमानता आज भारतीय समाज की एक बड़ी चुनौती बन चुकी है। कई ऐसे परिवार हैं जो किसी भी आरक्षित श्रेणी में नहीं आते, लेकिन आर्थिक तंगी के कारण अपने बच्चों को उच्च शिक्षा या प्रतियोगी परीक्षाओं की तैयारी के लिए पर्याप्त संसाधन नहीं दे पाते। ऐसे में यह मांग उठती है कि आरक्षण या सहायता का आधार आर्थिक स्थिति को बनाया जाए, ताकि वास्तविक जरूरतमंदों तक सहायता पहुंच सके।

इसी सोच के तहत सरकार ने आर्थिक रूप से कमजोर वर्ग (EWS) के लिए भी आरक्षण की व्यवस्था की है। यह एक महत्वपूर्ण कदम माना जा सकता है, क्योंकि यह स्वीकार करता है कि गरीबी केवल किसी एक सामाजिक वर्ग तक सीमित नहीं है। लेकिन इसके साथ ही यह सवाल भी बना रहता है कि क्या केवल आर्थिक आधार पर आरक्षण देना पर्याप्त होगा?

दूसरी ओर, आरक्षण के समर्थन में एक मजबूत तर्क यह है कि सामाजिक भेदभाव और असमानता अभी भी पूरी तरह समाप्त नहीं हुई है। कई अध्ययन और सामाजिक अनुभव यह दिखाते हैं कि समाज के कुछ वर्ग आज भी शिक्षा, रोजगार और सामाजिक स्वीकृति के स्तर पर पीछे हैं। भले ही कुछ लोग आर्थिक रूप से आगे बढ़ गए हों, लेकिन सामाजिक पहचान के आधार पर मिलने वाले भेदभाव का अनुभव पूरी तरह खत्म नहीं हुआ है। यही कारण है कि अनुसूचित जाति (SC) और अनुसूचित जनजाति (ST) के लिए आरक्षण को केवल आर्थिक सहायता के रूप में नहीं, बल्कि सामाजिक प्रतिनिधित्व के रूप में भी देखा जाता है।

यहाँ एक और महत्वपूर्ण मुद्दा सामने आता है—"क्रीमी लेयर" का। अन्य पिछड़ा वर्ग (OBC) में यह व्यवस्था लागू है, जिसके तहत आर्थिक रूप से सक्षम परिवारों को आरक्षण का लाभ नहीं दिया जाता। कई लोग यह मांग करते हैं कि इसी सिद्धांत को SC/ST वर्गों पर भी लागू किया जाए, ताकि आरक्षण का लाभ वास्तव में जरूरतमंद लोगों तक पहुंचे। हालांकि, इस पर मतभेद हैं, क्योंकि कुछ विशेषज्ञ मानते हैं कि इन वर्गों में सामाजिक भेदभाव का प्रभाव इतना गहरा है कि आर्थिक स्थिति बेहतर होने के बावजूद भी इसे नजरअंदाज नहीं किया जा सकता। मेडिकल और तकनीकी क्षेत्रों में आरक्षण को लेकर अक्सर चिंता व्यक्त की जाती है कि इससे गुणवत्ता पर असर पड़ सकता है। यह एक संवेदनशील मुद्दा है, क्योंकि इन क्षेत्रों का सीधा संबंध मानव जीवन और सुरक्षा से है। लेकिन यह भी ध्यान रखना चाहिए कि किसी भी पेशे में अंतिम योग्यता और दक्षता प्रशिक्षण, मेहनत और अनुभव से तय होती है।

(यह लेखक के निजी विचार है)

भारत सरकार राष्ट्रीय न्यायिक नियुक्ति आयोग विधेयक-2014 पर पुनर्विचार करें

डॉ. अभिनव,
असिस्टेंट प्रोफेसर, जनसंचार एवं मीडिया प्रौद्योगिकी संस्थान, कुरुक्षेत्र विश्वविद्यालय, कुरुक्षेत्र

आईये, हम पहले भारतीय न्यायपालिका को पुनः एक बार संक्षेप में समझ लेते हैं, क्योंकि राष्ट्रीय न्यायिक नियुक्ति आयोग विधेयक-2024 को इसके बाद ही समझा जा सकता है। भारत की न्यायपालिका उन अदालतों की प्रणाली है जो भारत गणराज्य में कानून की व्याख्या और लागू करते हैं। भारत का संविधान भारत में एक एकल और एकीकृत न्यायपालिका के लिए अवधारणा प्रदान करता है। भारत एक मिश्रित कानूनी प्रणाली का उपयोग करता है, जो कुछ धर्म विशिष्ट व्यक्तिगत कानूनों के साथ संयोजन में कुछ क्षेत्रों में लागू नागरिक कानूनों के साथ सामान्य कानून पर आधारित है। भारतीय न्यायपालिका को सहायक भागों के साथ तीन स्तरों में संरचित किया गया है। प्रथम सुप्रीम कोर्ट सर्वोच्च न्यायालय है और भारत में सभी नागरिक और आपराधिक मामलों के लिए अपील की अंतिम अदालत के रूप में कार्य करता है। दूसरे राज्य मुख्य न्यायाधीश के नेतृत्व में उच्च न्यायालय व्यक्तिगत राज्यों में शीर्ष न्यायिक अदालतें हैं। तीसरे स्तर पर उच्च न्यायालय अपने संबंधित न्यायालयों में विभिन्न जिलों और सत्र अदालतों के नेतृत्त्व वाली अधीनस्थ न्यायालयों की एक प्रणाली का प्रबंधन करते हैं। कार्यकारी और राजस्व न्यायालयों को संबंधित राज्य सरकारों द्वारा जिला मजिस्ट्रेट या अन्य कार्यकारी मजिस्ट्रेटों के माध्यम से प्रबंधित किया जाता है। यद्यपि कार्यकारी न्यायालय न्यायपालिका का हिस्सा नहीं हैं, विभिन्न प्रावधान और निर्णय उच्च न्यायालयों और सत्र न्यायाधीशों को उनके संचालन का निरीक्षण करने या निर्देशित करने के लिए सशक्त बनाते हैं। भारत के मुख्य न्यायाधीश, सुप्रीम कोर्ट के अन्य न्यायाधीशों और उच्च न्यायालयों को भारत के राष्ट्रपति द्वारा सुप्रीम कोर्ट के न्यायाधीशों से मिलकर एक कॉलेजियम प्रणाली (यह भारत की न्यायिक व्यवस्था है जिसके माध्यम से सर्वोच्च न्यायालय और उच्च न्यायालयों में न्यायाधीशों की नियुक्तियां तथा स्थानांतरण किया जाता है। यह प्रत्यक्ष संविधान में उल्लेखित प्रावधान नहीं है, बल्कि सर्वोच्च न्यायालय के निर्णयों, विशेष रूप से 'तृतीय न्यायाधीश मामले' से विकसित हुआ है। इस तरह की प्रणाली किसी भी लोकतांत्रिक देशों के न्यायाधीशों ने नहीं अपनाई है जोकि अपने आप में अनूठी है!) की सिफारिश पर नियुक्त किया जाता है। अधीनस्थ न्यायपालिकाओं के न्यायाधीशों को संबंधित उच्च न्यायालयों की सिफारिश पर राज्यपालों द्वारा नियुक्त किया जाता है।

संघ स्तर पर, कानून और न्याय मंत्रालय कानून बनाने और संसद के साथ न्यायपालिका से संबंधित मुद्दों को संबोधित करने के लिए जिम्मेदार है। यह किसी भी अदालत के मुद्दों से निपटने के लिए अधिकार क्षेत्र है और सर्वोच्च न्यायालय और उच्च न्यायालयों के विभिन्न न्यायाधीशों की नियुक्ति से भी संबंधित है। राज्य स्तर पर, राज्यों के संबंधित कानून विभाग उच्च न्यायालय और अधीनस्थ अदालतों के बारे में मुद्दों से निपटते हैं। भारतीय संविधान द्वारा स्थापित न्यायालय -भारत का संविधान न्यायपालिका को कानून के संरक्षक के रूप में कार्य करने का अधिकार देता है। कई प्रावधान न्यायपालिका की भूमिका, शक्ति, कार्य और अधिकारी नियुक्तियों से निपटते हैं। प्रमुख प्रावधान हैं जिनमें- भाग 5-अध्याय 4-संघ न्यायपालिका यानी, सुप्रीम कोर्ट -नियुक्ति और निष्कासन, भूमिका और कार्य। भाग- 6-अध्याय 5-उच्च न्यायालय-नियुक्ति और निष्कासन, भूमिका और कार्य। भाग 7- अध्याय 6- अधीनस्थ न्यायालयों-नियुक्ति और हटाने, भूमिका और कार्य। इसी तरह भारतीय संविधान के अनुच्छेद 50 में न्यायपालिका की स्वतंत्रता -न्यायपालिका को कार्यकारी शाखा से अलग करता है। भारतीय संविधान के अनुच्छेद-124 में लिखा गया है कि भारत का एक सर्वोच्च न्यायालय होगा। सुप्रीम कोर्ट 26 जनवरी 1950 को भारतीय संविधान के लागू होने के साथ अस्तित्व में आया। सुप्रीम कोर्ट ने शुरू में पुराने संसद हाउस से कार्य किया जब तक कि यह सन् 1958 में नई दिल्ली के तिलक मार्ग पर स्थित वर्तमान इमारत में नहीं चला गया।28 जनवरी 1950 को, भारत एक संप्रभु लोकतांत्रिक गणराज्य बनने के दो दिन बाद, सुप्रीम कोर्ट का उद्घाटन किया गया। उद्घाटन पुराने संसद भवन में 'चैंबर ऑफ प्रिंसेस' में हुआ, जहाँ भारत की संघीय अदालत सन् 1937 से सन् 1950 तक 12 वर्षों तक सफलतापूर्वक कार्य किया था।

भारत की न्यायपालिका में वर्तमान समय में भारत में 25 हाई कोर्ट हैं और इन हाई कोर्ट के तहत अदालत इस प्रकार से हैं- जिला अदालतें, जिला मुंसिफ कोर्ट, प्रथम श्रेणी के न्यायिक मजिस्ट्रेट की अदालत, द्वितीय श्रेणी के न्यायिक मजिस्ट्रेट कोर्ट, हाई-कोर्ट कार्य करती हैं।

(यह लेखक के निजी विचार है)

न्यूज ब्रीफ

ईरान ने अमेरिका को दिया बातचीत का नया प्रस्ताव, क्या बनेगी बात?

नई दिल्ली » मिडिल ईस्ट में जारी तनाव के बीच ईरान ने अमेरिका को एक नया प्रस्ताव भेजा है। ईरान की सरकारी मीडिया इरना के मुताबिक तेहरान ने पाकिस्तान के जरिये अपना प्रस्ताव अमेरिका को सौंपा है। ऐसे में उम्मीद की जा रही है कि ईरान के नये प्रस्ताव से दोनों देशों के बीच जारी तनाव कम हो सकता है। हालांकि नये प्रस्ताव में क्या है इसकी पूरी जानकारी सामने नहीं आई है। रिपोर्ट के अनुसार, ईरान के अपने प्रस्ताव में होर्मुज (Strait of Hormuz) से समुद्री यातायात को फिर से बहाल करने का सुझाव दिया है।

जल जीवन मिशन पर योगी का बड़ा एक्शन, बोले- लापरवाही करने वालों की अब खैर नहीं

नई दिल्ली » योगी आदित्यनाथ ने सभी जिला मजिस्ट्रेटों को निर्देश दिया है कि वे जल जीवन मिशन के अंतर्गत खुदाई कार्य के दौरान सुरक्षा मानकों का पूर्ण अनुपालन सुनिश्चित करें और यह भी सुनिश्चित करें कि काम पूरा होने के बाद खोदी गई सभी सड़कों और गड्ढों को तुरंत बहाल किया जाए। जिला मजिस्ट्रेटों और अन्य वरिष्ठ अधिकारियों को अनुपालन की निगरानी के लिए व्यक्तिगत रूप से स्थल निरीक्षण करने का निर्देश दिया गया है। मुख्यमंत्री ने स्पष्ट कर दिया है कि इस संबंध में किसी भी प्रकार की लापरवाही बर्दाश्त नहीं की जाएगी।

अमेरिका ने ऐसी तबाही पहले नहीं देखी...

ईरान ने 16 अमेरिकी सैन्य ठिकानों पर किए ऐसे हमले, आई बर्बादी की रिपोर्ट

एजेंसी » नई दिल्ली

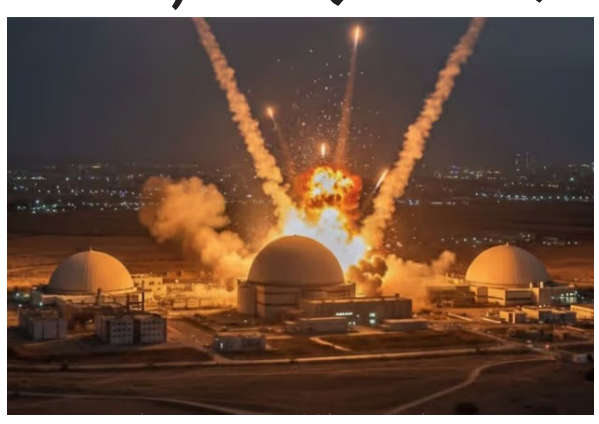

कुवैत के कैंप ब्यूहरिंग में अमेरिकी सैनिकों का खाड़ी क्षेत्र में सबसे बड़ा सैन्य केंद्र था। वहां का कभी चहल-पहल से भरा अमेरिकी माइक्रो-सिटी था। लेकिन अब वह लगभग खाली और बुरी तरह तबाह हो चुका है। यह नुकसान कई हफ्तों तक चले ईरानी मिसाइल और ड्रोन हमलों के कारण हुआ। ईरान ने केवल कुवैत ही नहीं, खाड़ी क्षेत्र के विभिन्न देशों में मौजूद अमेरिकी सैन्य ठिकानों को बेहिसाब नुकसान पहुंचाया है।

कुवैत उन कई अमेरिकी सैन्य ठिकानों में से एक था, जिन्हें ऑयल रिच अरब प्रायद्वीप में ईरान ने निशाना बनाया। रिपोर्ट के मुताबिक, ईरान के हमलों में आठ देशों में फैले कम से कम 16 अमेरिकी सैन्य ठिकानों को नुकसान पहुंचा। यह क्षेत्र में अमेरिका की अधिकांश सैन्य मौजूदगी को प्रभावित करता है। इनमें से कुछ ठिकाने अब लगभग इस्तेमाल के लायक नहीं बचे हैं। ईरान के हमले उस समय हुए, जब अमेरिका और इजरायल ईरान की रक्षा क्षमताओं पर हमले कर रहे थे। ईरान ने महत्वपूर्ण संचार उपकरणों को भी निशाना बनाया, खासतौर पर गोल्फ बॉल जैसे दिखने वाले बड़े ढांचे, जिन्हें रैडोम कहा जाता है। ये उपग्रह डिश की सुरक्षा करते हैं, जो डेटा ट्रांसमिशन के लिए बेहद जरूरी होते हैं। इस क्षेत्र में, युद्ध शुरू होने के एक महीने के भीतर ईरान ने लगभग सभी रैडोम नष्ट कर दिए, सिर्फ एक को छोड़कर।

ईरान ने किस चीज को बनाया निशाना?

इन हमलों की जांच में अभूतपूर्व तबाही के स्पष्ट सबूत मिले हैं। एक अमेरिकी सूत्र ने सीएनएन को बताया कि उन्होंने अमेरिकी सैन्य ठिकानों पर ऐसा नुकसान पहले कभी नहीं देखा। उनके अनुसार, ये हमले तेज, सटीक और उन्नत तकनीक के जरिए किए गए थे। ईरान के प्रमुख निशानों में मल्टी-मिलियन डॉलर के विमान भी शामिल थे, जैसे बोइंग ई-3 सेंट्री। यह खाड़ी क्षेत्र में अमेरिका को बड़ी निगरानी क्षमता प्रदान करता था। यह विमान अब उत्पादन में नहीं है और इसकी कीमत करीब 500 मिलियन डॉलर बताई जाती है।

पाक का खेल-तेल दोनों खत्म!

पेट्रोलियम मंत्री मलिक बोले- हमारे पास भारत की तरह सामरिक तेल भंडार नहीं

नई दिल्ली » कल तक ईरान और अमेरिका के बीच मध्यस्थता कराने को आतुर पाकिस्तान दुनिया को अपनी कूटनीति की क्षमता दिखाने निकला था, लेकिन उसे पहले अपने घर की हालत सुधारनी चाहिए थी। न तो ईरान और अमेरिका के बीच तनाव थमा और न ही पाकिस्तान अपनी साख बचा पाया। उल्टा हाल यह हो गया है कि उसकी अर्थव्यवस्था ढहने के कगार पर पहुंच गई है। पाकिस्तान में तेल की भारी कमी है और जो उपलब्ध है वह इतना महंगा हो चुका है कि आम जनता त्राहि त्राहि कर रही है।

देखा जाये तो इस्लामाबाद की चमकदार कूटनीति का मुखौटा उस वक्त पूरी तरह उतर गया जब ईरान ने आखिरी समय पर ऐसा कदम उठाया जिसने पाकिस्तान की सारी रणनीति ध्वस्त कर दी। जिस मंच को उसने खुद को वैश्विक मध्यस्थ के रूप में स्थापित करने के लिए तैयार किया था, वही मंच उसकी दोहरी नीति और कमजोर रणनीतिक समझ को उजागर कर गया। पाकिस्तान ने खुद को अमेरिका और चीन के बीच संतुलन साधने वाला देश दिखाने की कोशिश की, लेकिन यह संतुलन अब बिखरता नजर आ रहा है।

यूएस की शिपिंग कंपनियों को चेतावनी

होर्मुज जलडमरूमध्य में ईरान को पेमेंट पर लगेंगे कड़े प्रतिबंध

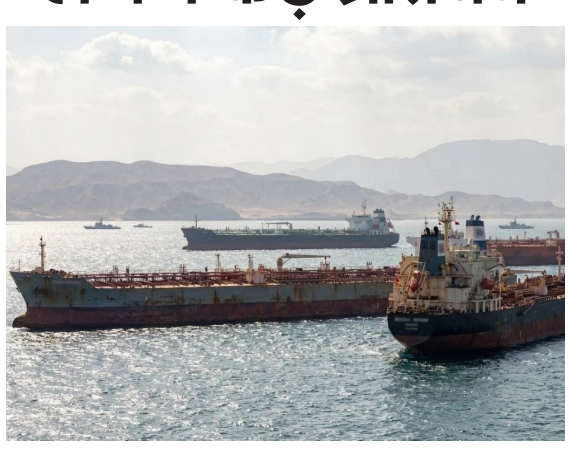

एजेंसी » नई दिल्ली

अमेरिका ने शिपिंग कंपनियों को चेतावनी दी है कि होर्मुज जलडमरूमध्य से सुरक्षित रूप से गुजरने के लिए ईरान को भुगतान करने पर उन्हें प्रतिबंधों का सामना करना पड़ सकता है। हॉर्मुज जलडमरूमध्य पर नियंत्रण को लेकर अमेरिका और ईरान के बीच जारी टकराव के बीच अमेरिकी विदेशी संपत्ति नियंत्रण कार्यालय (ओएफएसी) द्वारा शुक्रवार को दी गई चेतावनी ने दबाव और बढ़ा दिया है। आम तौर पर शांति के समय दुनिया के तेल और प्राकृतिक गैस के व्यापार का लगभग पांचवां हिस्सा होर्मुज जलडमरूमध्य से होकर गुजरता है।

ईरान ने 28 फरवरी को अमेरिका और इज़राइल द्वारा युद्ध शुरू किए जाने के बाद जहाज़ों पर हमले की धमकियां देकर और हमले करते हुए जलडमरूमध्य को सामान्य यातायात के लिए लगभग बंद कर दिया। बाद में उसने कुछ जहाजों को अपनी तटरेखा के करीब वैकल्पिक मार्गों से मोड़कर सुरक्षित मार्ग प्रदान करना शुरू किया, और कई बार इस सेवा के लिए शुल्क भी वसूला। अमेरिका की प्रतिबंध चेतावनी का मुख्य केंद्र यह "टोलबूथ" जैसी व्यवस्था है। ओएफएसी के अनुसार, भुगतान की मांगों में केवल नकद ही नहीं, बल्कि डिजिटल परिसंपत्तियां, समायोजन (ऑफसेट), अनौपचारिक अदला-बदली, या अन्य प्रकार के वस्तु-आधारित भुगतान भी शामिल हो सकते हैं, जिनमें परमार्थ दान और ईरानी दूतावासों में किए जाने वाले भुगतान भी शामिल हैं।

ओएफएसी ने कहा कि वह यह चेतावनी इसलिए जारी कर रहा है ताकि अमेरिकी और गैर-अमेरिकी व्यक्तियों को इस बात से अवगत कराया जा सके कि ईरानी शासन को सुरक्षित मार्ग के लिए भुगतान करने या उससे गारंटी की मांग करने पर प्रतिबंधों का सामना करना पड़ सकता है।

उसने यह भी स्पष्ट किया कि ये जोखिम भुगतान के किसी भी तरीके पर लागू होते हैं। अमेरिका ने 13 अप्रैल को ईरान द्वारा जलडमरूमध्य बंद किए जाने के जवाब में अपनी ओर से एक नौसैनिक नाकाबंदी लागू की, जिससे किसी भी ईरानी तेल टैंकर को बाहर जाने से रोका गया और ईरान को उसकी कमजोर अर्थव्यवस्था को संभालने के लिए आवश्यक तेल राजस्व से वंचित कर दिया गया। अमेरिकी सेंट्रल कमांड ने कहा कि नाकाबंदी शुरू होने के बाद से 45 वाणिज्यिक जहाजों को वापस जाने को कहा गया है।

स्वामी विवेकानंद की प्रतिमा

अमेरिकी इतिहास में पहली बार किसी शहर की सरकार ने लगाई मूर्ति

नई दिल्ली » अमेरिका के सिएटल शहर ने एक नया इतिहास रच दिया है। सिएटल की सरकार ने अपने शहर के बीचों-बीच वेस्टलेक स्क्वायर पार्क में स्वामी विवेकानंद की आदमकद (लाइफ साइज) कांस्य प्रतिमा स्थापित की है। अमेरिका में यह पहली बार है जब किसी शहर की सरकार ने स्वामी विवेकानंद की मूर्ति को आधिकारिक तौर पर अपने सार्वजनिक स्थान पर जगह दी है। शनिवार को सिएटल की मेयर केटी विल्सन और भारत के महावाणिज्य दूत ने मिलकर इस प्रतिमा का उद्घाटन किया।

कनाडाई खुफिया एजेंसी रिपोर्ट

खालिस्तान सुरक्षा के लिए खतरा घोषित, भारत पर लगाए आरोप

एजेंसी » नई दिल्ली

कनाडा की खुफिया एजेंसी कनाडियन सिक्योरिटी इंटेलीजेंस सर्विस (सीएसआईएस) ने शुक्रवार को एक रिपोर्ट जारी की। इसमें उसने कनाडा में सक्रिय खालिस्तानी तत्वों से पैदा होने वाले खतरे को स्वीकार किया है। CSIS रिपोर्ट 2025 को कनाडाई संसद में पेश किया गया। इसमें कहा गया है कि कनाडा आधारित खालिस्तानी तत्वों की गतिविधियां अब भी एक हिंसक उग्रवादी एजेंडे को बढ़ावा दे रही हैं।

रिपोर्ट में कहा गया, 'यह वर्ष एयर इंडिया फ्लाइट 182 बम विस्फोट की 40वीं बरसी का प्रतीक है, जिसके संदिग्ध कनाडा बेस्ड खालिस्तानी एक्सट्रीमिस्ट (सीबीकेई) समूहों से जुड़े थे। यह कनाडा के अब तक के इतिहास का सबसे घातक आतंकी हमला है, जिसमें 329 लोगों की मौत हुई थी। इनमें अधिकतर कनाडाई नागरिक थे। 2025 में सीबीकेई से जुड़ा कोई हमला कनाडा में नहीं हुआ।' भारत और कनाडा के संबंध पहले ही तनावपूर्ण रहे हैं। इसकी एक बड़ी वजह कनाडा पर खालिस्तानी अलगाववादी तत्वों के प्रति नरमी बरतने के आरोप और 2023 में गुरुद्वारे के बाहर एनआईए द्वारा नामित आतंकी हरदीप सिंह निज्जर की हत्या में भारतीय एजेंटों की कथित संलिप्तता को लेकर कनाडा के आरोप रहे हैं।

मार्क कार्नी के पीएम बनने के बाद कनाडा में बदले हालात...

यह रिपोर्ट 2025 के खुफिया आकलन पर आधारित है। इसके बाद हालात में बदलाव देखने को मिला है, खासकर मार्क कार्नी के प्रधानमंत्री बनने के बाद। इस साल भारत यात्रा से पहले कनाडाई अधिकारियों ने कहा था कि फिलहाल कनाडा की धरती पर होने वाले हिंसक अपराधों या खतरों से भारत का कोई सीधा संबंध नहीं पाया गया है। इस बयान की पुष्टि रॉयल कैनेडियन माउंटेड पुलिस के कमिश्नर माइक डुहेम ने भी की। उन्होंने कहा कि भारत से जुड़े किसी एजेंट से कनाडा को कोई खतरा नहीं है।

यूएन ने जताई चिंता...

ईरान में नहीं थम रही फांसी, इजरायल से जुड़े 2 और लोगों को लटकाया

नई दिल्ली » ईरान ने शनिवार को दो लोगों को फांसी दे दी, जिन पर इजरायल के लिए जासूसी करने का आरोप था। इनमें से एक पर मध्य इस्फ़हान प्रांत के नतान्ज़ परमाणु स्थल के पास खुफिया जानकारी जुटाने का आरोप था। ईरानी मीडिया ने यह जानकारी दी। न्यायपालिका ने कहा कि यागुब करीमपुर और नासिर बकरज़ादेह को इजरायल और उसकी जासूसी एजेंसी मोसाद के साथ खुफिया सहयोग करने का दोषी पाए जाने के बाद फांसी दी गई। करीमपुर पर मोसाद के एक अधिकारी को संवेदनशील जानकारी देने का आरोप था, जबकि बकरज़ादेह पर सरकारी और धार्मिक हस्तियों के साथ-साथ नतान्ज़ क्षेत्र सहित महत्वपूर्ण स्थलों के बारे में जानकारी जुटाने का आरोप था।

स्पोर्ट्स ब्रीफ

टेनिस के नए बादशाह यानिक सिनर, 350वीं जीत के साथ संभ्रांत क्लब में शामिल

नई दिल्ली » विश्व के नंबर एक खिलाड़ी यानिक सिनर ने अपना शानदार प्रदर्शन जारी रखते हुए अपने करियर की 350वीं जीत हासिल की और पहली बार मैड्रिड ओपन टेनिस टूर्नामेंट के फाइनल में जगह बनाई। सिनर ने आर्थर फिल्स को 6-2, 6-4 से हराकर अपनी जीत का सिलसिला 22 मैच तक बढ़ा दिया। सिनर लगातार पांचवें मास्टर्स 1000 टूर्नामेंट में दुनिया में तीसरे नंबर के खिलाड़ी एलेक्जेंडर ज्वेरेव का सामना करेंगे। जर्मन खिलाड़ी ने सेमीफाइनल में बेल्जियम के एलेक्जेंडर ब्लॉकक्स को 6-2, 7-5 से हराया।

लिवरपूल फैंस को मिली बड़ी राहत, मोहम्मद सलाह जल्द लौटेंगे मैदान पर

नई दिल्ली » फुटबॉल प्रेमियों के लिए थोड़ी राहत भरी खबर सामने आई है, जहां लिवरपूल के स्टार खिलाड़ी मोहम्मद सलाह की चोट उतनी गंभीर नहीं निकली जितनी पहले आशंका जताई जा रही थी। मौजूद जानकारी के अनुसार, हाल ही में खेले गए मुकाबले में क्रिस्टल पैलेस के खिलाफ जीत के दौरान सलाह को मांसपेशियों में समस्या हुई थी, जिसके बाद उन्हें मैदान छोड़ना पड़ा था और उनकी वापसी को लेकर संशय बना हुआ था। बताया जा रहा था कि यह चोट हैमस्ट्रिंग से जुड़ी हो सकती है और कुछ रिपोर्टों में यह भी दावा किया गया कि वह इस सीजन में दोबारा मैदान पर नहीं उतर पाएंगे।

कुश्ती में विनेश फोगाट का कमबैक

गोंडा में 'खतरे' की आशंका पर सीधा सरकार को घेरा

हिन्दुस्तान एकता » नई दिल्ली

सीनियर महिला पहलवान विनेश फोगाट ने रविवार को चेतावनी दी कि गोंडा में आगामी राष्ट्रीय ओपन रैंकिंग कुश्ती टूर्नामेंट के दौरान उनके या उनकी टीम के सदस्यों के साथ कुछ भी अप्रिय घटना होने पर भारत सरकार जिम्मेदार होगी। इसके साथ ही उन्होंने प्रतियोगिता में ''पक्षपातपूर्ण फैसलों'' की आशंका भी जताई। विनेश ने लगभग 18 महीनों के बाद वापसी करने से पहले एक वीडियो संदेश में आरोप लगाया कि बृज भूषण शरण सिंह से जुड़े स्थल पर होने वाली प्रतियोगिता के परिणामों पर भारतीय कुश्ती महासंघ (डब्ल्यूएफआई) के पूर्व प्रमुख के करीबी व्यक्ति प्रभाव डाल सकते हैं।

विनेश ने कहा, ''प्रतियोगिता के दौरान अगर मेरे, मेरी टीम या समर्थकों के साथ कोई अप्रिय घटना घटती है तो इसके लिए भारत सरकार जिम्मेदार होगी।'' उन्होंने प्रतियोगिता के दौरान पारदर्शिता सुनिश्चित करने के लिए मीडिया और खेल समुदाय से आयोजन स्थल पर उपस्थित रहने का आग्रह किया। विनेश ने कहा, ''यह टूर्नामेंट ऐसी जगह आयोजित किया जा रहा है जहां उनका (बृज का) काफी प्रभाव है। किसी मुकाबले में कौन रेफरी होगा, कितने अंक दिए जाएंगे, मैट चेयरमैन कौन होगा, सब कुछ उनके और उनके लोगों के नियंत्रण में है।''

पिछले कुछ महीनो से अभ्यास कर रही इस 31 वर्षीय खिलाड़ी ने कहा कि वह ''ईमानदारी से'' कुश्ती में वापसी करना चाहती हैं और देश के लिए फिर से पदक जीतना चाहती हैं, लेकिन उन्होंने निष्पक्ष प्रतिस्पर्धा को लेकर संदेह व्यक्त किया। उन्होंने कहा, ''मुझे किसी तरह का विशेषाधिकार या विशेष व्यवहार नहीं चाहिए। मैं बस इतना चाहती हूं कि परिणाम प्रदर्शन के अनुकूल हों।'' गौरतलब है कि विनेश अब राजनीतिज्ञ भी हैं, जिन्होंने अक्टूबर 2024 में कांग्रेस के टिकट पर जुलाना निर्वाचन क्षेत्र से हरियाणा राज्य विधानसभा चुनाव जीता था। विनेश ने एक ऐसे माहौल में प्रतिस्पर्धा करने के मानसिक दबाव पर भी चिंता व्यक्त की जिसे उन्होंने शत्रुतापूर्ण करार दिया, क्योंकि वह सिंह के खिलाफ चल रहे यौन उत्पीड़न मामले में एक शिकायतकर्ता है।

विनेश ने पीड़ितों की पहचान और गरिमा को लेकर उच्चतम न्यायालय के दिशानिर्देशों का हवाला देते हुए कहा कि परिस्थितियों के कारण उन्हें सार्वजनिक रूप से बोलने के लिए विवश होना पड़ा। उन्होंने कहा, ''मैं उन छह महिला पहलवानों में से एक हूं जिन्होंने शिकायत दर्ज कराई है। मामला अभी अदालत में है और गवाहों से पूछताछ चल रही है। उससे जुड़े किसी स्थान पर प्रतिस्पर्धा करना, जहां अधिकतर लोग उससे संबंधित हो सकते हैं, मुझ पर अत्याधिक मानसिक दबाव बनाता है।'' विनेश ने कहा, ''मुझे संदेह है कि मैं उस माहौल में अपना शत प्रतिशत दे पाऊंगी।''

उन्होंने अधिकारियों पर निष्क्रियता का आरोप लगाते हुए कहा कि सरकार और खेल मंत्रालय ''तमाशबीन की तरह देख रहे थे'' और उन्होंने सिंह को ''पूरी छूट'' दे दी थी। विनेश गोंडा में महिलाओं के 57 किलोग्राम भार वर्ग में प्रतिस्पर्धा करेंगी। इससे पहले वह 50 किलोग्राम और 53 किलोग्राम वर्ग में प्रतिस्पर्धा कर चुकी हैं।

जीत के बाद गरजे आशुतोष-

जब तक क्रीज पर हूं, दिल्ली कैपिटल्स को जिता सकता हूं

नई दिल्ली » दिल्ली कैपिटल्स के बल्लेबाज आशुतोष शर्मा ने कहा कि वह मौजूदा इंडियन प्रीमियर लीग (आईपीएल) में फिनिशर की भूमिका निभाने का आनंद ले रहे हैं और टीम की जीत में योगदान देकर उन्हें बहुत खुशी होती है। दिल्ली कैपिटल्स ने यहां खेले गए मैच में राजस्थान रॉयल्स पर सात विकेट से जीत हासिल की जिसमें आशुतोष ने 15 गेंदों में नाबाद 25 रन बनाकर फिनिशर की भूमिका अच्छी तरह से निभाई। इस जीत से उनकी टीम ने लगातार तीन मैचों में हार का सिलसिला तोड़ा।

आशुतोष ने मैच के बाद पत्रकारों से कहा, 'मुझे अपनी टीम के लिए फिनिशर की भूमिका निभाकर अच्छा लगता है। टीम ने इन परिस्थितियों में मुझ पर भरोसा किया है और मुझे ऐसे मौकों पर खेलना पसंद है। मुझे हमेशा लगता है कि जब तक मैं क्रीज पर हूं, टीम को जीत दिला सकता हूं।'

सबसे कम उम्र में रचा इतिहास

बार्सिलोना के पेड्री ने तोड़ा मेस्सी-जावी का महा-रिकॉर्ड

नई दिल्ली » स्पेन के क्लब बार्सिलोना के युवा मिडफील्डर पेड्री गोंजालेज ने एक खास रिकॉर्ड अपने नाम कर लिया है। मौजूद जानकारी के अनुसार, टीम के हालिया मुकाबले में उन्होंने अपने क्लब के लिए 200वीं बार शुरुआती एकादश में जगह बनाई है, जो उनके करियर का एक बड़ा पड़ाव माना जा रहा है।

बता दें कि यह मुकाबला ओसासुना के खिलाफ खेला गया, जिसमें पेड्री ने गावी के साथ मिडफील्ड में अहम भूमिका निभाई है। गौरतलब है कि पेड्री ने यह उपलब्धि बेहद कम उम्र में हासिल की है और वह अब क्लब के इतिहास में सबसे कम उम्र में 200 मैच शुरू करने वाले खिलाड़ी बन गए हैं। मौजूद आंकड़ों के अनुसार, इससे पहले यह रिकॉर्ड जावी हर्नांडेज और लियोनेल मेस्सी के नाम था, जिन्होंने क्रमशः 24 और 23 वर्ष की उम्र में यह मुकाम हासिल किया था। वहीं पेड्री ने यह उपलब्धि सिर्फ 23 वर्ष 159 दिन की उम्र में हासिल कर ली है, जो अपने आप में बड़ी बात मानी जा रही है। अगर पेड्री के प्रदर्शन की बात करें तो जब से वह क्लब में शामिल हुए हैं, तब से लगातार टीम के मिडफील्ड की रीढ़ बने हुए हैं। बता दें कि उनकी खेल शैली, गेंद पर नियंत्रण और मैच को पढ़ने की क्षमता ने उन्हें टीम का सबसे भरोसेमंद खिलाड़ी बना दिया है। यही वजह है कि मौजूदा समय में उनके बिना टीम की कल्पना करना मुश्किल माना जा रहा है।

थॉमस कप में भारत का धमाल, चीनी ताइपी को 3-0 से रौंदकर सेमीफाइनल में बनाई जगह

एजेंसी » नई दिल्ली

बैडमिंटन में भारत के लिए एक बड़ी और उत्साहजनक खबर सामने आई है, जहां भारतीय पुरुष टीम ने शानदार प्रदर्शन करते हुए थॉमस कप के सेमीफाइनल में जगह बना ली है। टीम ने क्वार्टर फाइनल मुकाबले में चीनी ताइपे को एकतरफा अंदाज में 3-0 से हराकर अपनी ताकत का दमदार प्रदर्शन किया है। मौजूद जानकारी के अनुसार, इस जीत के साथ भारत ने कम से कम कांस्य पदक पक्का कर लिया है। मुकाबले को निर्णायक अंदाज में आयुष शेट्टी ने खत्म किया, जिन्होंने लिन चुन यी के खिलाफ सीधे गेम में 21-16, 21-17 से जीत दर्ज की। बता दें कि आयुष पूरे मैच में संतुलित और आत्मविश्वास से भरे नजर आए और उन्होंने दबाव की स्थिति में भी बेहतरीन नियंत्रण बनाए रखा।

इससे पहले, भारत को शानदार शुरुआत लक्ष्य सेन ने दिलाई। गौरतलब है कि लक्ष्य सेन ने विश्व के छठे नंबर के खिलाड़ी चाउ तिएन चेन के खिलाफ जबरदस्त वापसी करते हुए मुकाबला अपने नाम किया है। करीब एक घंटे 28 मिनट तक चले इस मुकाबले में लक्ष्य ने 18-21, 22-20, 21-17 से जीत दर्ज की है। मौजूद जानकारी के अनुसार, दूसरे गेम में लक्ष्य सेन के सामने दो मैच प्वाइंट की चुनौती थी, लेकिन उन्होंने धैर्य और संयम दिखाते हुए दोनों को बचाया और मुकाबले को निर्णायक गेम तक पहुंचाया है। तीसरे गेम में उन्होंने पूरी तरह नियंत्रण बनाते हुए भारत को अहम बढ़त दिलाई है। इसके बाद युगल मुकाबले में सात्विकसाईराज रंकीरेड्डी और चिराग शेट्टी की जोड़ी ने टीम की बढ़त को और मजबूत किया है।

हार के बाद डबडबा गईं रियान पराग की आंखें

नई दिल्ली » राजस्थान रॉयल्स के कप्तान रियान पराग ने शुक्रवार (1 मई) को इंडियन प्रीमियर लीग (आईपीएल) टी20 मैच में दिल्ली कैपिटल्स से मिली हार के बाद कहा कि बीच के ओवरों में और बेहतर गेंदबाजी कर सकते थे। पराग ने मैच के बाद कहा कि मुझे लगा कि यह एक अच्छा स्कोर था। 200 के आस-पास का स्कोर ठीक था। रियान पराग चोटिल होने के कारण मैदान से बाहर चले गए थे। उन्होंने अपनी चोट के बारे में कहा कि उम्मीद है कि यह ज्यादा गंभीर नहीं है, हैमस्ट्रिंग चोट लगी है। एक हफ्ते का ब्रेक लूंगा, फिर सब ठीक हो जाएगा।

विश्व रिले 2026: अनिमेष की अगुवाई में मैदान में उतरेगी भारतीय टीम, नजरें विश्व चैंपियनशिप पर

एजेंसी » नई दिल्ली

भारत की पांच टीमें शनिवार से यहां शुरू हो रही विश्व एथलेटिक्स रिले में हिस्सा लेंगी और अगले साल की विश्व चैंपियनशिप में जगह बनाने की कोशिश करेंगी। 21 सदस्यों वाली भारतीय टीम की अगुवाई स्टार स्प्रिंटर अनिमेष कुजूर कर रहे हैं और इस टीम में आठ महिला भी शामिल हैं।

पहले दिन की शुरुआत मिश्रित चार गुणा 100 मीटर स्पर्धा के क्वालीफाइंग राउंड से होगी। इसके बाद मिश्रित चार गुणा 400 मीटर, महिलाओं की चार गुणा 100 मीटर, पुरुषों की चार गुणा 100 मीटर और पुरुषों की चार गुणा 400 मीटर में पहले दौर की क्वालीफाइंग रेस होंगी। मिश्रित चार गुणा 100 मीटर रिले ने 2025 में विश्व रिले के पिछले चरण में अपना वैश्विक पदार्पण किया था।

बॉलीवुड न्यूज

मुनव्वर फारूकी और महज़बीन कोटवाला के घर गूंजी किलकारी

कॉमेडी किंग और 'बिग बॉस 17' के विजेता मुनव्वर फारूकी के जीवन में खुशियों ने एक नई दस्तक दी है। मुनव्वर और उनकी पत्नी, मशहूर मेकअप आर्टिस्ट महज़बीन कोटवाला, आधिकारिक रूप से माता-पिता बन गए हैं। उनके घर एक नन्ही परी (बेटी) का जन्म हुआ है, जिसकी जानकारी मुनव्वर ने सोशल मीडिया के ज़रिए अपने चाहने वालों के साथ साझा की। इस जोड़े ने इंस्टाग्राम पोस्ट के ज़रिए अपने फैंस के साथ यह खुशी की खबर शेयर की। शुक्रवार को, मुनव्वर ने अस्पताल से कई तस्वीरें पोस्ट कीं, जिनमें उनकी पत्नी और नवजात बच्ची नज़र आ रही थीं, लेकिन उन्होंने किसी का भी चेहरा नहीं दिखाया। कैप्शन में मुनव्वर फारूकी ने लिखा, घर में बरकत आई। अल्हम्दुलिल्लाह, दुआओं में खास याद रखना !

रिलायंस रिटेल ने खरीदा अभिनेत्री प्रियंका चोपड़ा का ग्लोबल ब्रांड 'एनॉमली'

भारतीय रिटेल क्षेत्र की दिग्गज कंपनी रिलायंस रिटेल ने सौंदर्य और व्यक्तिगत देखभाल के क्षेत्र में अपनी पैठ मजबूत करते हुए एक बड़ा धमाका किया है। कंपनी ने बॉलीवुड और ग्लोबल आइकन प्रियंका चोपड़ा जोनस के हेयर केयर ब्रांड 'एनॉमली' का अधिग्रहण कर लिया है। बृहस्पतिवार को हुई इस घोषणा के बाद रिलायंस रिटेल अब इस वैश्विक ब्रांड के ट्रेडमार्क और डिजिटल परिसंपत्तियों का पूर्ण स्वामित्व रखेगा। हालांकि, इस सौदे की वित्तीय राशि का खुलासा नहीं किया गया है। कंपनी ने बताया कि उसने 'एनॉमली' के ट्रेडमार्क और डिजिटल परिसंपत्तियों का अधिग्रहण किया है और अब इसे अपने ओमनीचैनल रिटेल नेटवर्क तथा सौंदर्य उत्पाद बेचने वाले ऑनलाइन मंच 'टिरा' के जरिए विस्तार देने की योजना है। रिलायंस रिटेल ने बयान में कहा, "यह अधिग्रहण हमारे तेजी से बढ़ते सौंदर्य कारोबार का महत्वपूर्ण विस्तार है और यह भारत और दुनिया में तेजी से बढ़ने वाले उपभोक्ता ब्रांड बनाने की हमारी प्रतिबद्धता को मजबूत करता है।"

सैफ अली खान की 'कर्तव्य' का दमदार पोस्टर रिलीज, नेटफ्लिक्स पर देगी दस्तक

सैफ अली खान एक बार फिर अपने गंभीर और दमदार अंदाज में पर्दे पर वापसी कर रहे हैं। उनकी आने वाली थ्रिलर फिल्म 'कर्तव्य' को लेकर फैंस के बीच काफी चर्चा है। इस फिल्म का निर्देशन पुलकित ने किया है और खास बात यह है कि इसे शाहरुख खान की कंपनी रेड चिलीज एंटरटेनमेंट ने प्रोड्यूस किया है। गुरुवार को खुद किंग खान ने सोशल मीडिया पर इस फिल्म की रिलीज डेट से पर्दा उठाया।

शाहरुख खान ने इंस्टाग्राम पर फिल्म का पोस्टर शेयर करते हुए लिखा, 'कर्तव्य के इस चक्रव्यूह में, हर फैसला एक इम्तिहान होगा।' उन्होंने बताया कि यह फिल्म 15 मई को सीधे नेटफ्लिक्स पर रिलीज होने जा रही है। रिलीज डेट के साथ सामने आए नए पोस्टर में सैफ अली खान एक पुलिस वाले की वर्दी में नजर आ रहे हैं। उनके चेहरे पर चोट के निशान और बैकग्राउंड में खेत का नजारा फिल्म की कहानी के गंभीर होने का इशारा कर रहा है।

'राजा शिवाजी' ने रिलीज के पहले दिन ही 11.35 करोड़ की शानदार कमाई

राम गोपाल वर्मा ने किया रिव्यू, बोले- बॉक्स ऑफिस पर मचा रही है धूम

मराठी सिनेमा की मोस्ट अवेटेड फिल्म 'राजा शिवाजी' 1 मई को सिनेमाघरों में रिलीज हो चुकी है और इसने बॉक्स ऑफिस पर दमदार शुरुआत की है। अभिनेता रितेश देशमुख इस फिल्म में न सिर्फ लीड रोल में नजर आ रहे हैं, बल्कि उन्होंने इसे डायरेक्ट और को-राइट भी किया है। फिल्म को दर्शकों के साथ-साथ इंडस्ट्री के दिग्गजों से भी खूब सराहना मिल रही है। अब राम गोपाल वर्मा ने इसकी तारीफ की है। राम गोपाल वर्मा ने रितेश देशमुख की फिल्म 'राजा शिवाजी' की जमकर तारीफ की। राम गोपाल वर्मा ने एक्स (पहले ट्विटर) पर लिखा, "हे @geneliad, आपकी फिल्म #RajaShivaji बॉक्स ऑफिस पर धूम मचा रही है, इसके लिए आपको बहुत-बहुत बधाई @Riteishd निर्देशक और अभिनेता दोनों के रूप में सिनेमाघरों में तहलका मचा रहे हैं और वे सचमुच #ShivajiMaharaj के पुनर्जन्म लग रहे हैं।"

राजा शिवाजी का पहले दिन का बॉक्स ऑफिस कलेक्शन

फिल्म इंडस्ट्री ट्रैकर Sacnilk के अनुसार, राजा शिवाजी ने भारत में अपने पहले दिन 6,192 शो में 11.35 करोड़ का कलेक्शन किया। मराठी वर्जन ने कुल कलेक्शन में 8.00 करोड़ का योगदान दिया, जबकि हिंदी वर्जन ने पहले दिन की कमाई में 3.35 करोड़ जोड़े। राजा शिवाजी ने महाराष्ट्र के सांगली में सबसे अधिक ऑक्यूपेंसी दर्ज की, इसके बाद पुणे, मुंबई और नासिक का स्थान रहा।

राजा शिवाजी के बारे में... राजा शिवाजी फिल्म में रितेश देशमुख मुख्य भूमिका में हैं और इसमें अभिषेक बच्चन, जेनेलिया देशमुख, संजय दत्त, महेश मांजरेकर, सचिन खेडेकर, भाग्यश्री, फरदीन खान, जितेंद्र जोशी और अमोले गुप्ते सहित कई कलाकार शामिल हैं। यह ऐतिहासिक ड्रामा मराठा शासक छत्रपति शिवाजी महाराज के प्रारंभिक जीवन को दर्शाता है।

रामायण की कहानी को लेकर बोले यश

रावण बने यश ने फिल्म की कहानी पर कहा- हमारी संस्कृति का हिस्सा

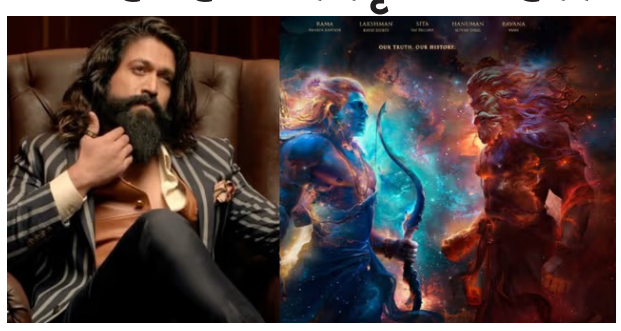

साउथ एक्टर यश अपनी अपकमिंग फिल्म 'रामायण' के प्रमोशन के लिए सिनेमाकॉन में शामिल हुए। रणबीर कपूर के राम के किरदार में रावण की भूमिका निभा रहे यश ने फिल्म से जुड़ी हर बात खुलकर बताई।

यश ने बताया क्यों बने रामायण का हिस्सा... यश ने कोलाइडर संग बातचीत में बताया कि वह क्यों रामायण का हिस्सा बनना चाहते हैं। एक्टर ने कहा, "यह एक ऐसी कहानी है, जो 5,000 वर्षों से चली आ रही है। यह हमारी संस्कृति का हिस्सा है। यह हमारा इतिहास है। इसलिए जब कोई देश इस कहानी से इतना करीब से जुड़ा होता है, लोगों से इतना करीब से जुड़ा होता है, तो इसका कुछ महत्व होता है क्योंकि यह इतने लंबे समय से चली आ रही है। इसका वास्तव में इतना महत्व है।"

रामायण की कहानी को लेकर क्या बोले यश... उन्होंने कहा, "मुझे लगता है कि यह मानवता की कहानी है। यह इस बारे में है कि किसी भी परिस्थिति में एक व्यक्ति को गरिमापूर्ण व्यवहार कैसे करना चाहिए।" राक्षस रावण का किरदार निभाने वाले यश ने बताया कि फिल्म भगवान राम, जो विष्णु के अवतार हैं, के जीवन और आदर्शों पर आधारित है और कैसे उनके आदर्श और जीवन यात्रा सभी को प्रेरित कर सकती है। अपने एक्सपीरियंस के बारे में बात करते हुए उन्होंने स्वीकार किया, "यह बहुत चुनौतीपूर्ण है।" एक्टिंग के प्रति अपने प्यार को शेयर करते हुए उन्होंने बताया, "अभिनेता बनने पर ही आपको ये सभी अवसर मिलते हैं। चूंकि मुझे यह पेशा बहुत पसंद है, जैसा कि कहते हैं, आपको उन चीजों से प्यार हो जाता है जिन्हें करना जरूरी होता है। मैं इसे इसी तरह लेता हूं, इसलिए मैं इस प्रक्रिया का आनंद लेता हूं।"

'क्योंकि सास भी कभी बहू थी 2'

रेयांश-वैष्णवी के बीच शुरू होगी लव स्टोरी, उड़ेंगे तुलसी के होश

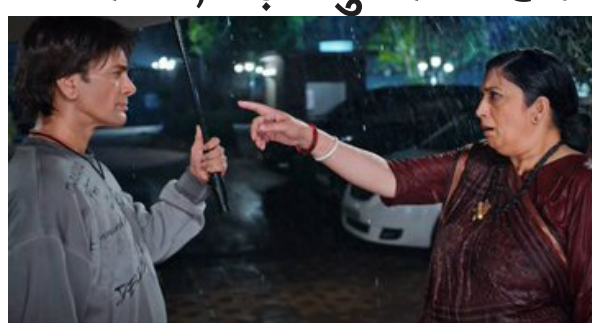

टीवी का मशहूर शो 'क्योंकि सास भी कभी बहू थी 2' इन दिनों चर्चा का विषय बना हुआ है। शो के मेकर्स ने एक ऐसा मास्टरस्ट्रोक खेला है, जिसने टीआरपी के सारे पुराने रिकॉर्ड्स तोड़ दिए हैं। पिछले काफी समय से फैंस को अंश के बेटे रेयांश की एंट्री का इंतजार था और अब रेयांश ने तुलसी की जिंदगी में कदम रख दिया है। रेयांश के आते ही यह सीरियल एक बार फिर टीआरपी लिस्ट में नंबर वन पर पहुंच गया है। रेयांश को देख कर तुलसी के होश उड़ गए हैं, क्योंकि उसकी शक्ल हूबहू अंश जैसी है।

तुलसी के सामने आया सालों पुराना सच... सीरियल में दिखाया गया कि जैसे ही तुलसी ने रेयांश को देखा, वह दंग रह गई। इसके बाद करण ने तुलसी को सारा सच बताया कि कैसे रेयांश और नियति उनकी जिंदगी का हिस्सा बने। जहां एक तरफ शांति निकेतन में तुलसी और मिहिर की शादी की तैयारियां जोर-शोर से चल रही हैं, वहीं दूसरी तरफ रेयांश की मौजूदगी ने नंदिनी की रातों की नींद उड़ा दी है। अतीत के काले पन्ने एक बार फिर सबके सामने खुलने लगे हैं।

क्या वैष्णवी बनेगी रेयांश का शिकार? कहानी में सबसे बड़ा ट्विस्ट रेयांश और वैष्णवी की मुलाकात से आने वाला है। पिछले एपिसोड में दोनों की टक्कर दिखाई गई थी। आने वाले दिनों में रेयांश और वैष्णवी के बीच प्यार का एंगल दिखाया जाएगा। चर्चा यह भी है कि रेयांश, वैष्णवी के साथ वैसा ही कुछ गलत कर सकता है जैसा सालों पहले अंश ने नंदिनी के साथ किया था। अगर ऐसा होता है, तो तुलसी को एक बार फिर वही कठोर कदम उठाना पड़ सकता है जो उसने अतीत में उठाया था।

नियति चलेगी पुरानी चाल... रेयांश ही नहीं, बल्कि नियति भी कहानी में आग लगाने के लिए तैयार है। सोशल मीडिया पर ऐसी खबरें हैं कि जब नियति को नंदिनी और करण का सच पता चलेगा, तो वह नॉइना की तरह खतरनाक चालें चलेगी।

38वां जन्मदिन

शोहरत की बुलंदी पर थीं अनुष्का शर्मा

फिर अचानक फिल्मों से बना ली दूरी...

बॉलीवुड अभिनेत्री अनुष्का शर्मा ने 1 मई को अपना 38वां जन्मदिन मनाया। इस खास मौके पर फैंस और फिल्मी सितारे सोशल मीडिया पर उन्हें शुभकामनाएं दे रहे हैं। अनुष्का शर्मा उन अभिनेत्रियों में गिनी जाती हैं जिन्होंने कम समय में अपनी दमदार एक्टिंग और अलग फिल्म चयन के दम पर इंडस्ट्री में खास पहचान बनाई। हालांकि करियर के शानदार दौर में ही उन्होंने फिल्मों से दूरी बना ली, जिसकी चर्चा आज भी होती है।

शाहरुख खान के साथ किया था शानदार डेब्यू... अनुष्का शर्मा ने साल 2008 में Rab Ne Bana Di Jodi से बॉलीवुड में कदम रखा था। इस फिल्म में उनके साथ शाहरुख खान नजर आए थे। पहली ही फिल्म बॉक्स ऑफिस पर सुपरहिट साबित हुई और अनुष्का रातों-रात चर्चा में आ गईं। इसके बाद उन्होंने पीछे मुड़कर नहीं देखा। उन्होंने बैंड बाजा बारात, लेडीज वर्सेस रिकी बहल और जब तक है जान जैसी फिल्मों में अपनी शानदार अदाकारी से दर्शकों का दिल जीत लिया। इसके अलावा पीके, एनएच10, दिल धड़कने दो और सुलतान जैसी फिल्मों ने उनके करियर को नई ऊंचाई दी।

विराट कोहली से शादी के बाद बदली जिंदगी... अनुष्का शर्मा ने साल 2017 में भारतीय क्रिकेट टीम के स्टार खिलाड़ी विराट कोहली से शादी की। दोनों की लव स्टोरी लंबे समय तक सुर्खियों में रही थी। शादी के बाद अनुष्का ने फिल्मों में काम कम कर दिया और परिवार को ज्यादा समय देने लगीं। पिछले कुछ वर्षों में वह बहुत कम फिल्मों और सार्वजनिक कार्यक्रमों में नजर आई हैं।

आज भी फैंस के बीच बरकरार है क्रेज... भले ही अनुष्का शर्मा लंबे समय से बड़े पर्दे से दूर हों, लेकिन उनकी लोकप्रियता में कोई कमी नहीं आई है। उनके जन्मदिन पर सोशल मीडिया पर फैंस उनकी फिल्मों के डायलॉग, गाने और किरदारों को याद कर रहे हैं। कई लोगों ने उनकी फिल्मों को दोबारा देखने की भी बात कही है।

'धुरंधर' में 'जमील जमाली' को देख जेठालाल हुए इम्प्रेस, कहा- पहले ही सुपरस्टार थे बेदी

पापुलर शो तारक मेहता का उल्टा चश्मा में जेठालाल का किरदार निभाने वाले दिलीप जोशी ने हाल ही में पुराने दिनों को याद किया। उन्होंने अपने दोस्त और 'धुरंधर' फेम राकेश बेदी के साथ काम करने के अनुभव साझा किए और उनकी जमकर तारीफ की। दिलीप जोशी ने आईएएनएस से बात करते हुए कहा, "आज पूरी दुनिया उनके काम की तारीफ कर रही है और मैं तो इतना बड़ा नहीं हूं कि राकेश जी के बारे में कुछ कह सकूं। वह बहुत सीनियर अभिनेता हैं और कई सालों से इंडस्ट्री का हिस्सा रहे हैं। वह बेहद टैलेंटेड हैं, उन्होंने हमेशा अच्छा काम किया है और आगे भी करते रहेंगे।" उन्होंने यह भी बताया कि राकेश बेदी जैसे बड़े कलाकार के साथ काम करना उनके लिए खास अनुभव रहा है।

सुपरस्टार धर्मेंद्र को याद कर भावुक हुईं हेमा मालिनी

उनकी कमी बेहद महसूस होती है, सदमे से उबरना मुश्किल...

भारतीय सिनेमा के इतिहास में अपनी सादगी और अभिनय से करोड़ों दिलों पर राज करने वाले सुपरस्टार धर्मेंद्र को याद करते हुए उनकी पत्नी और अभिनेत्री-राजनेता हेमा मालिनी भावुक हो गईं। मुंबई के राष्ट्रीय आधुनिक कला दीर्घा (NGMA) में आयोजित प्रदर्शनी 'लेंस एंड लेगेसीः बॉलीवुड इन फोकस' के उद्घाटन के दौरान उन्होंने अपने दिवंगत पति को श्रद्धांजलि दी और उनके साथ बिताए पलों को याद किया।

यह प्रदर्शनी भारतीय सिनेमा की दृश्य संस्कृति का व्यापक और प्रभावशाली उत्सव है। प्रदर्शनी में धर्मेंद्र और आशा भोसले को विशेष श्रद्धांजलि दी गई। हेमामालिनी ने कहा, "मैं बहुत सौभाग्यशाली रही कि मुझे उनके साथ जीवन बिताने का अवसर मिला। मैं उन्हें बहुत याद करती हूं। अब वह नहीं हैं, तो मुझे नहीं पता कि मैं पूरी जिंदगी इससे कैसे उबर पाऊंगी।"

धर्मेंद्र को श्रद्धांजलि देते हुए वह भावुक हो गईं और उन्होंने न केवल भारतीय सिनेमा में उनके योगदान, बल्कि उनके व्यक्तित्व को भी याद किया। उन्होंने कहा, "मेरे लिए इस प्रदर्शनी का हिस्सा बनना बहुत मायने रखता है। यह श्रद्धांजलि सिर्फ फिल्म उद्योग में उनके योगदान का सम्मान नहीं है, बल्कि उनके सफर, जुनून, समर्पण और दर्शकों के प्रति उनके प्रेम को भी दर्शाती है। वह हमेशा कहते थे कि फिल्म दिल से जुड़ने का माध्यम है। उन्हें फिल्मों में काम करने और कैमरे के सामने रहने का गहरा जुनून था।"

'ही-मैन' के नाम से मशहूर धर्मेंद्र ने दशकों तक फैले अपने करियर में एक मजबूत विरासत बनाई और अपने अभिनय व सादगी से करोड़ों लोगों का दिल जीता। एक्शन भूमिकाओं से लेकर हल्की-फुल्की कॉमेडी और भावनात्मक ड्रामा तक, वह अपने दौर के सबसे प्रशंसित अभिनेताओं में से एक थे। इस दिग्गज अभिनेता काउनके 90वें जन्मदिन (8 दिसंबर) से कुछ दिन पहले, 24 नवंबर, 2025 को निधन हो गया था। अपने निजी जीवन की झलक साझा करते हुए हेमामालिनी ने कहा, "जीवनसाथी के रूप में मैंने देखा कि वह कितने जुनूनी थे। उन्होंने अपने शानदार अभिनय और व्यवहार से लाखों लोगों के दिलों को छुआ। उन्होंने युवा पीढ़ी सहित कई लोगों को प्रेरित किया। एक अभिनेता, मित्र और पिता के रूप में वह महान इंसान थे।" इस वर्ष 12 अप्रैल को फिल्म उद्योग ने दिग्गज गायिका आशा भोसले (92) को भी खो दिया। हेमामालिनी ने कहा कि आशा भोसले और लता मंगेशकर के गीतों ने पर्दे पर उनके व्यक्तित्व को खास पहचान दी। उन्होंने कहा, "हमने एक महान, मधुर आवाज वाली गायिका को खो दिया है। उन्होंने मेरे लिए उतने ही गीत गाए, जितने लता जी ने गाए।" इस प्रदर्शनी में भारत के प्रतिष्ठित फोटो-पत्रकारों—प्रदीप चंद्रा, शांतनु दास, सुधारक ओलवे और बंदीप सिंह—के कार्यों के साथ-साथ अभिलेखागार विशेषज्ञ, लेखक और फिल्म इतिहासकार एस एम एम औसाजा तथा नेहा कामत द्वारा संकलित दुर्लभ संग्रह भी प्रदर्शित किए हैं। एनजीएमए के संग्रह से लिए गए बालकृष्ण के कार्य भी इसमें शामिल हैं, जिनमें मधुबाला, वहीदा रहमान, वैजयंतीमाला और नरगिस जैसी हस्तियों के चित्र शामिल हैं। हेमामालिनी ने इस प्रदर्शनी को एक दुर्लभ अनुभव बताया और कहा कि यह उन्हें पुरानी यादों में ले गई। उन्होंने कहा, "यह बहुत बड़े लोगों का बड़ा योगदान है। यह प्रदर्शनी पूरे उद्योग की यात्रा का दृश्यात्मक अनुभव है। हर फ्रेम में गहरी यादें समाई हैं और हर पोस्टर हमें पुरानी यादों में ले जाता है।"

स्वामी, प्रकाशक, मुद्रक एवं संपादक कलासो देवी के द्वारा सूचना प्रिंटर, 33 एस मॉडल टाउन मार्केट हिसार, हरियाणा से मुद्रित करवाकर बाला जी सेनेटरी स्टोर, करनाल रोड, डिफेंस कॉलोनी, गली नंबर-8, रिलायंस स्मार्ट पॉइंट के पास, कैथल से प्रकाशित। संपादक कलासो देवी। किसी भी विवाद के लिए न्याय क्षेत्र कैथल होगा। RNI No. HRHIN/26/A1127, मोबाइल नंबरः 9499422208, Email: Info@hindustanekta.com